सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2010 वर्ष 09 अंक 09

छुरी न चली

हज़रते जकरीया पर आरा चल गया
कि हज़रते यहया का वजूद हो चुका था
हज़रते इब्राहीम आग में ना जले
उनकी नस्ल को आगे चलना था
हज़रते इस्माईल पर छुरी न चली
उनकी नस्ल में मुहम्मद को आना था
अल्लाहुम्म सल्लि अला इब्राहीम व इस्माईल
वमुहम्मद व बारिक व संल्लिम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Visoin Computer- +91 94510 64588, +91 90260 43858

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
अल्लाह तआ़ला को तुम्हारी कुर्बानियों का	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जग नायक	मौ0 (स0) मु0 राबे हसनी नदवी	6
हजरत इब्राहीम अलै0 की हिज्रत	अख़्लाक़ अहमद क़ादिरी	8
बेपर्दगी की हिमायत क्यों?	डॉ0 मुहम्मद अहमद	10
मुस्लिम समाज	मौ0 स0 मु0 राबे हसनी नदवी	11
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	13
मोतमद माल नदवतुल उलमा जवारे रहमते रब	इदारा	14
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्लाह	15
हबीबुल्ला आज़मी का इन्तेकाल	एम0 हसन अंसारी	17
इस्लाम और पर्यावरण	बदरूल इस्लाम	18
इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?	अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी	20
बकरईद की कुर्बानी	इदारा	23
ख़वातीने इस्लाम	मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी	24
सैलानी की डायरी	एम0 हसन अंसारी	28
हज मुबारक		29
रौज–ए–मुबारक और मस्जिदे नबवी	मुहम्मद सलमान नकवी नदवी	30
जनाब हबीबुल्लाह आज़मी अल्लाह की रहमत में	डॉ हारून रशीद सिद्दीकी	34
एक हफ्ता हिमालय की गोद में	एम0 हसन अंसारी	35
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुरआन की शिक्षा

– मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बकरह आयत 31 से 33

अनुवाद :

और सिखला दिये अल्लाह ने आदम को नाम सब चीजों के फिर सामने किया उन सब चीजों को फिरिश्तों के, फिर फरमाया बताओ मुझ को नाम इन के अगर तुम सच्चे हो(31), बोले पाक है तू हमको मालूम नहीं मगर जितना तूने हमको सिखाया, बेशक तू ही है अस्ल जानने वाला हिकमत वाला[1](32), फरमाया ऐ आदम बता दे फिरिश्तों को इन चीजों के नाम फिर जब बता दिये उसने उनके नाम, फरमाया क्या न कहा था मैंने तुमको कि मैं खूब जानता हूँ छुपी हुई चीजें आसमानों की और ज़मीन की और जानता हूँ जो तुम जाहिर करते हो और जो छुपाते हो[2](33)।

तफ्सीर

खुलासा यह है कि हक़ तआला ने हज़रत आदम को हर एक चीज का नाम उसकी हकीकत के साथ और ख़ासियत और नफ़ा और नुक्सान के साथ सिखा दिया, और यह इल्म उनके दिल में बिल वास्त–ए–कलाम इल्का कर दिया क्योंकि इस इल्मी कमाल के बिना खिलाफत और दुनिया पर हुकूमत कैसे मुमकिन है उस के बाद फिरिश्तों को इस हिकमत को बताने की वजह से फिरिश्तों से उमूरे मजकूरा का सुवाल किया गया कि अगर तुम अपनी बात में कि तुम खिलाफत का काम कर सकते हो, सच्चे हो तो इन चीजों के नाम व काम बताओ लेकिन उन्होंने अपनी बेबसी और कमी का इकरार किया और खूब समझ गये कि इस इल्म के बिना कोई खिलाफत का काम ज़मीन में नहीं कर सकता और इस आम इल्म से कदरे कलील हम को अगर हासिल हुआ भी तो इतनी बात से हम खिलाफत के काबिल नहीं हो सकते यह समझ कर कह उठे कि तेरे इल्म व हिकमत को कोई नहीं समझ सकता।

2– उसके बाद हज़रत आदम से जो तमाम आलम की चीजों के बारे में सुवाल हुआ तो फट–फट सब बाते फिरिश्तों को बता दीं कि वह भी सब दगं रह गये। और हज़रत आदम के इल्म पर तअज्जुब करने लगे तो अल्लाह तआला ने फिरिश्तों से फरमाया कि कहो हम न कहते थे कि हम सभी छुपी बातों को जो आसमानों और ज़मीन में है उनका जानने वाला हूँ और तुम्हारे दिल में जो बातें छुपी हैं वह भी सब हम को मालूम है।

फाइदः

इससे इल्म की बड़ाई इबादत पर साबित हुई देखिये इबादत में फिरिश्ते इस कदर बढ़े हुए हैं कि मासूम हैं, मगर इल्म में चूँकि इन्सान से कम है इस लिए खिलाफत का मरतबा इन्सान ही को अता हुआ और फिरिश्तों ने भी इस को मान लिया और होना भी यूँ ही चाहिये। क्यों कि इबादत तो मखलूक़ की ख़ासियत है खुदा की सिफत नहीं अलबत्ता इल्म अल्लाह तआला की अअ़ला (उच्च) सिफत है। इस लिये खिलाफत के काबिल यही हुए। क्यों कि हर खलीफा में जिस का वह खलीफा है उस का कमाल होना जरूरी है।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनु0 : नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत कैस बिन बशर तुगलबी (रज़ि0) से रिवायत है कि मेरे बाप हज़रत अबूदर्दा (रज़ि0) की संगत में रहा करते थे। उन्होंने मुझसे बयान किया कि दमिश्क में एक साहब थे जिनकी गिनती हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों में थी, उनको लोग इब्नुल हन्जलिया कहते थे। वह तन्हाई पसन्द थे, लोगों से बहुत कम मेल–जोल रखते थे और ज्यादा से ज्यादा वक्त उनका नमाज में गुजरता था। जब नमाज से फारिग़ होते तो तस्बीह व तक्बीर में वक्त गुजारते। उसके बाद फिर घर जाते थे, और घर जाते तो हमारी ही तरफ से होकर गुजरते थे और हम अबूदर्दा (रज़ि0) के पास बैठे होते थे, जब हमारी तरफ से होकर निकले तो अबूदर्दा (रज़ि0) ने उनसे कहा, एक ऐसी बात बतलाओ कि जिससे हमें नफा हो और तुमको कोई नुक्सान न हो। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर जिहाद के लिए भेजा, जब वह पलट कर आया तो उनमें से एक साहब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुए, जहाँ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा थे, ये बैठ गए और उनके पहलू में एक साहब और बैठे थे तो ये अपने पास बैठने वाले सहाबी से कहने लगे, सुना तुमने जब हमसे और दुश्मन से मुकाबला हुआ तो मैंने एक आदमी को देखा कि उसने नेजा उठाया और कहा कि मैं गेफार क़बीले का नवजवान हूँ, तो तुम उसके कथन के बारे में क्या कहते हो, उन्होंने कहा मेरे ख्याल में उसका अज्र बातिल हो गया। ये बात दूसरे शख्स ने सुनकर कहा कि मेरे नजदीक तो उसमें कोई हरज नहीं है। उनकी ये बहस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुन ली और इर्शाद फरमाया, सुब्हानल्लाह अगर उसने ऐसा कहा तो कोई डर नहीं हो सकता कि उसको अज्र भी मिले और वह तारीफ का मुस्तहिक भी हो। मैंने देखा कि अबूदर्दा (रज़ि0) इस बात से खुश होकर अपना सर उठाते थे और कहते थे कि क्या तुमने इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है? वह कहते थे हाँ और वह बराबर इसकी तकरार करते रहे और मुझे ख्याल हुआ कि ये अपने घुटनों के बल बैठ जाएंगे। एक दिन हमारे पास से गुजरे तो अबूदर्दा (रज़ि0) ने कहा एक बात ऐसी बतलाओ जिससे हमको नफा हो और तुमको नुक्सान न हो। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह ने फरमाया (जिहाद के) घोड़ो पर खर्च करने वाला उस शख्स की तरह है जो सदका करने में हमेशा अपना हाथ खुला रखे कभी बन्द न करे। फिर एक दिन हमारे पास से गुजरे तो अबूदर्दा (रज़ि0) ने कहा, कोई ऐसी बात सुनाओ कि हमको नफा पहुँचे और तुमको कुछ नुक्सान न हो। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, खुरैम उसैदी खूब आदमी है अगर उसके सर के बाल लंबे न होते और उसकी तहबन्द लटकी हुई न होती। जब उसकी खबर खुरैम उसैदी को हुई तो उन्होंने कैंची लेकर अपने बाल कानों तक काट डाले और तहबन्द आधी पिण्डली तक उठाली, फिर वह एक दिन हमारी जानिब से गुजरे तो अबूदर्दा (रज़ि0) ने फिर वही सवाल किया कि एक बात ऐसी सुनाओ जिससे हमको नफा हो और तुमको कुछ नुक्सान न हो, उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना है कि अपने भाइयों के पास जा रहे हो तो तुम अपने कजावे को और अपने कपड़ो को दुरूस्त कर लो, गोया तुम लोगों में ऐसे हो जैसे चेहरे पर तिल(1) होता है और अल्लाह तआला बेहूदगी और बदतमीज़ी को पसन्द नहीं करता। **जारी.....** (अबूदाऊद)

❑❑

1. यानि नुमाया व मुमताज़

अल्लाह तआ़ला को तुम्हारी कुर्बानियों का न

गोश्त पहुँचता है न खून लेकिन तुम्हारा तक़्वा पहुंचता है

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

लफ्ज़े तक़्वा ऐसा लफ्ज है जिस का तर्जमा (अनुवाद) किसी दूसरी जबान में आसान नहीं। तक़्वा का तर्ज़मा किसी ने डरने से किया तो किसी ने गुनाहो से बचने का। किसी सहाबी ने किसी सहाबी से तक़्वे का मतलब पूछा तो उन्होंने कहा क्या तुम्हारा किसी ऐसे रास्ते से गुजर हुआ है जो काँटेदार झाड़ियों से होकर गुजरा हो, कहा हाँ, पूछा कैसे गुजरे? कहा कपड़े समेट लिये और बच कर निकल गये। फरमाया दुन्या के मकरूहात से अपने को बचा कर इससे गुजर जाना यही तक़्वा है।

सुवाल यहां यह होता है कि जब हमारी कुर्बानी का अल्लाह तआला को न गोश्त पहुँचता है न खून, सिर्फ तक़्वा पहुँचता है तो इसका क्या मतलब है और हम फिर जानवर जब्ह कर के कुर्बानी क्यों करते हैं?

अस्ल में तक़्वा और मुकम्मल इस्लाम दो अलग चीजें नहीं हैं। इस्लाम तक्वा है और तक्वा इस्लाम है। अस्ल में अल्लाह की इताअत में सर झुका देने का नाम इस्लाम है। इस्लाम की दो किस्में की जा सकती है एक यह कि इस्लाम की अहम चीजों को अपना लें जिन के बिना उसे मुस्लमान ही नहीं कहा जा सकता, दूसरे यह कि उसका कोई काम इस्लामी तालीमात से अलग नहीं होता हो इसको कुर्आन ने कहा है, "इस्लाम में पूरे–पूरे दाखिल हो जाओ" पस इस्लाम में पूरे–पूरे दाखिल होना ही तक्वा है।

इसको इस तरह भी समझा जा सकता है कि हर हाल में अल्लाह का लिहाज़ हो। हमारे हज़रत मौलाना अल्ी मियाँ साहब नदवी (रह0) ने अक्सर जगह यही माना लिखे हैं इस लिहाज से हमारा कोई काम अपनी मर्जी से हो ही नहीं सकता। हमने जानवर की कुर्बानी इस लिये की कि अल्लाह तआला ने अपने नबी के जरिये हमको हुक्म दिया कि कुर्बानी करो, हमने अल्लाह का हुक्म माना उसका लिहाज़ किया और कोई परवाह न की कि एक जानवर की जान जाएगी या जानवर की कीमत बेकार जाएगी, हमने अल्लाह के लिहाज में जानवर की गर्दन पर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर छुरी चला दी, यही हमारी इताअत का जज्बा तक्वा है जो अल्लाह के यहाँ मक्बूल हुआ, यही मतलब हुआ अल्लाह तक तक्वा पहुँचने का।

बाज मजाहिब में उनके माबूद उनकी कुर्बानी के गोश्त व खून से लाभ उठाते है, इस्लाम ने इसका रद किया और बताया अल्लाह तआला इन ऐबों से पाक है।

कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी करने से जियादा सवाब किसी दूसरी इबादत में नहीं। इस का भी यही मतलब है कि हमारा बन्दा अपना अक्ली फलसफा लगाता है या हमारे हुक्म का लिहाज करता है।

❑❑

सच्चा राही के सहायक .....

पाठको से अनुरोध है कि आज़मी साहब के लिये मगफिरत की और मेरे लिये इमान बिलखैर की दुआ करें। इन्तिकाल के दूसरे रोज सनीचर को जुहर के वक्त जनाजा नदवे लाया गया, जनाब मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी मुहतमिम दारुलउलूम ने नमाजे जनाजा पढ़ाई। अगरचि रमजान की तातील के सबब तलबा व असातिजा अपने अपने घर चले गये थे फिर भी नमाज में शरीक होने वालो की तादाद कई सौ थी जिस में शहर के अमाएदीन की भी खासी तादाद थी। डाली गंज के कब्रिस्तान में तदफीन अमल में आई, अल्लाह तआला मगफिरत फरमाए। शोकाकुल परिवार में तीन बेटे दो बेटियाँ हैं, खुदा का शुक्र है सब खुशहाल हैं।)

❑❑

किस्त : 21

जगनायक

हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

– अनु0 : मुहम्मद गुफ़रान नदवी

सर्वव्यापी और सर्वकालिक शरीअ़त

चुनाँचि जो शरीअ़त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दी गई वह आखरी ज़माने तक जारी रहने वाली शरीअ़त करार दी गई और विश्व स्तर पर हर इलाके, हर मुल्क के लोगों के लिये यक्साँ रखी गई है, इसी बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "खातमुल अंबिया व रूसुल" (नबियों और रसूलों के अंतक) करार दिया गया, और सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअ़त को ऐसी मुकम्मल (पूर्ण) शरीअ़त बनाया गया है जिसमें अब कोई तरमीम (संशोधन) नहीं होता है और "शरीअ़ते इलाही" की हिफ़ाजत व बका (सुरक्षा व स्थिरता) इसी शरीअ़त में रखो गई है, इसलिये इससे वाकिफ होना और अपनी ज़िन्दगी को उसके मुताबिक ढालना लाजिम करार दिया गया है, जो शरीअ़त आपको दी गई वह बुनयादी तौर पर पिछले नबियों को दी गई शरीअ़त ही की तरह है, इस तरह वह कोई नई शरीअ़त नहीं है, बल्कि वह पिछले नबियों को दी गई शरीअ़त के तसलसुल (अनुक्रम) से जुड़ी हुई है। अलबत्ता उनकी "शरीअ़त" अपने–अपने ज़मानों के लिये और अपनी–अपनी कौमों के लिये होती रही है और आखिरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई "शरीअ़त" मुकम्मल और सारे इन्सानों, ज़मानों और आइन्दा (आगामी) आने वाले इन्सानों के हालात के लिहाज से व्यापी और कियामत तक बाकी रहने वाली शरीअ़त है।

शरीअ़ते मुहम्मदी के बुनयादी अरकान (स्तंभ)

1. तमाम पिछले नबियों और आखिरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दी गई शरीअ़त में संयुक्त और केन्द्रीय बिन्दु "तौहीद" का बिन्दु है इस लिये एक अल्लाह को इन्सानों और दूसरी तमाम मखलूकात (सृष्टि) का खालिक, मालिक, राजिक और आसमान व ज़मीन और सारी काएनात (संसार) को पैदा करने वाला और चलाने वाला मानना है, उस पर ईमान लाना और उसकी इबादत को उसी के साथ खास करना लाजमी (अनिवार्य) है, और उसके साथ किसी को शरीक करना, किसी और को खुदा समझना, यह उस खालिक मालिक व राजिक के खिलाफ बल्कि उसको नाराज करने वाला अमल है, किसी जात को ख्वाह इन्सानी हो या किसी दूसरी मखलूक (सृष्टि) से सम्बन्ध रखती हो, अल्लाह के साथ शरीक करने की इजाज़त नहीं है, यही वह मुकामे तौहीद (एकश्वरवाद) है, जिसकी दअवत हर नबी ने दी, और इसका पैगाम उसकी नाजिल की हुई तमाम किताबों और "वही" के जरिए नबियों को दिया गया। तौरैत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, जबूर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर, इनजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर और कुरआन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा गया।

2. फिर अल्लाह तआला के इन्हीं हुक्मों को मानने के लिये उसके बताने वाले लोग अल्लाह तआला की तरफ से नियुक्त किये हुवे नबी होते रहे, उनका कौल व अमल अल्लाह तआला की तरफ से ही होता रहा, लिहाजा उसका मानना भी जरूरी है, क्योंकि उसके जरिए बताई हुई बात रब्बुल आलमीन की बताई हुई बात होती है, और वह खुदाई पैगाम (रिसालत) होता है, इसको हर नबी अपने रब की तरफ से पहुँचाता है, वह कहता है कि मैं अल्लाह का भेजा हुवा "पैगाम्बर" हूँ और मेरी बात अल्लाह की तरफ से है, उसको मानो, लिहाजा नबी और उसकी बात का मानना दूसरा बुनयादी नुकतह (बिन्दु) है।

3. इसके बअद तीसरा बुनयादी नुकतह (बिन्दु) आखिरत का बिन्दु है कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के

बअद दूसरी सर्व कालिक और अनन्त ज़िन्दगी, आखिरत की ज़िन्दगी होगी, जिसमें हर इन्सान को जाना है, उसमें इन्सान को वहाँ जो राहत सुहूलत हासिल होगी, वह सिर्फ उसी कदर होगी जिस कदर अपने नबी की बात मानी होगी।

4. इन तीन बुनयादी बातों के बअद इस बात के भी मानने की जरूरत होती है कि अल्लाह तआला की एक मखलूक फरिश्ते भी हैं और वह आसमानी मखलूक हैं जो इन्सानी आँखो से नज़र नहीं आते, वह आम तौर पर अपनी न देखी जाने वाली शकल में आते और परवरदिगार का पैगाम नबियों तक पहुँचाते हैं, वह अल्लाह तआला के मुकम्मल ताबेदार (आज्ञाकारी) बन्दे होते हैं और अपने परवरदिगार की इच्छा और प्रसन्नता के अनुकूल काम करते हैं और हर समय रब्बुल आलमीन की इबादत में लगे रहते हैं।

5. इसी तरह यह बात भी मानना है कि सारी मखलूकात (सृष्टि) और सारे जहानों को तनहा एक खुदा ही ने पैदा किया है, और उनको यूँ ही बे समझे बूझे पैदा नहीं किया, बल्कि उनके पैदा करने का मकसद (उद्देश्य) है और पैदा किये जाने के बअद उनकी ज़िन्दगी की तफसील पहले से तै कर दी थी, लिहाजा जो कुछ होता है उसी के मुताबिक होता है, अच्छा हो या बुरा, और इसी को तकदीर कहते हैं, और दुनिया की इस ज़िन्दगी के बअद "आखिरत" की न खत्म होने वाली ज़िन्दगी होगी जिसमें दुनिया वाली ज़िन्दगी के आमाल का हिसाब व किताब, जज़ा व सज़ा होगी, यह दीन की वह बुनयाद हैं जिन को मानने के बअद उनके मुताबिक अमल करने के जो अहकाम व हिदायात हैं उनको "शरीअ़त" कहते हैं और इसी को रब्बुल आलमीन की तरफ़ से तै किया हुवा दीन बल्कि दीने इस्लाम कहते हैं, फरमाया : (इन्नद्दीन इन्दल्लाहिल इस्लाम) कि दीन अल्लाह तआला की तरफ से "इस्लाम" ही है।

उपरोक्त बातों के मानने को इन अलफाज में बयान किया गया है "मैं ईमान लाया अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर आखिरत के दिन पर और इस बात पर कि जो कुछ अच्छा बुरा होता है वह सब अल्लाह के हुक्म और तकदीर से है और मैं ईमान लाया मरने के बअद दोबारा जिन्दा किये जाने पर"।

इन बुनयादी बातों को मानने के बअद उन सब पर अमल करने का मआमला आता है, जिसको "शरीअ़त" कहते हैं, इसमें ज़िन्दगी के तौर तरीक (आचार व्यवहार) को खुदा के हुक्मों के मुताबिक अन्जाम देने के आदेश और शिक्षा होती है जो नबी को "वही" के जरिए दी जाती है, हर नबी इन्सानों को अपने परवरदिगार की मर्जी के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारने, एक दूसरे के साथ सुलूक व मआमलात, खुदा की तरफ से दी गई नेमतों के हासिल करने व इस्तेमाल का तरीका और खुदा के हुक्मों पर चलने का तरीका बतलाता है और नबी की यह सारी तालीम "वही" के जरिए दी जाती है, इस तरीके से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुकम्मल किया जाने वाला दीन इल्म व अमल दोनों पर मुशतमल (आधारित) है।

❑❑

मुस्लिम समाज

वह इन्सान के लिये अख़ला–कियात की पाबन्दी को भी स्वीकार नहीं करते, बल्कि उनको आजाद छोड़ देना चाहते हैं। लेकिन मुस्लिम विद्यार्थी का मामला भिन्न है उसके लिये साहित्य और साधन दोनों का ही नेक और लाभप्रद होना जरूरी है। और उसे नैतिक आचरण का भी पाबन्द होना है।

मुसलमानों के पाठ्यक्रम में तीन प्रकार की विषय वस्तु का होना जरूरी है। (i) प्राकृतिक और उससे सम्बन्धित ज्ञान, (ii) भाषा व साहित्य और सामाजिक विज्ञान (iii) अख़लाकी और मज़हबी उलूम (ज्ञान)। इन्सानी जीवन की संरचना में यह तीनों अपनी–अपनी जगह पर असर डालते और काम करते हैं।

साराँश यह है कि समाज–सुधार और उसकी दीक्षा में शिक्षा व्यवस्था का बड़ा महत्वपूर्ण रोल है। लेकिन इसके लिये जरूरी होता है कि इसके अन्दर इस्लामी समाज की बेहतर और सन्तुलित जीवन के तमाम आयामों का ध्यान रखा जाये। (जारी...)

❑❑

हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) की हिज्रत

– अख़्लाक़ अहमद क़ादिरी

अनु0 – इरशाद अली खान

हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) सुमेरियों के प्राचनी शहर 'उर' में पैदा हुए और कनआन वालों की ओर हिज्रत तक यहीं आबाद रहे। अरब इतिहासकारों और तौरेत के अनुसार आपके पिता का नाम तारुख बिन नाहूर है। कुर्आन पाक में आपके पिता का नाम आजर आया है, जो उनका लकब है। कल्दानी भाषा में 'आज़र' बड़े पुजारी या बुततराश को कहते थे, यही शब्द अरबी में 'आजर' बन गया, चूँकि 'तारुख' मूर्तिकार और सबसे बड़ा मूर्तिपूजक था, इसलिए आजर जो उसकी उपाधि थी के नाम से मशहूर हो गया और कुर्आन ने भी उसे इसी नाम से पुकारा।

अक्सर अनुसंधानकर्ता और दार्शनिक इस बात पर एकमत है कि हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) बाबिल के बादशाह हमूराबी के समकालीन थे, जिसके शासनकाल का अंदाजा कुछ इतिहासकारों ने 2067 से 2024 ईसा पूर्व तक किया है। आधुनिक अनुसंधान के अनुसार अब यह ज़माना 1955 से 1913 ईसा पूर्व बताया जता है। कुछ विद्वान इतिहासकार इस बात को स्वीकार करते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) ने 20 वर्ष की आयु में हिज्रत की हो, तो हमूराबी के शासनकाल में इनका कनआन में मौजूद होना संभव है, क्योंकि हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) ने 120 वर्ष की दीर्घायु पायी थी।

सुमेरियों का शहर 'उर' केवल हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) की प्रसिद्धि के कारण अस्तित्व में आने के बाद हजारों वर्ष इन्सानों के ममन मस्तिष्क में केवल इसलिए मौजूद रहा कि तौरेत में हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) को कल्दानियों के शहर 'उर' का बादशाह बताया गया था। हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) ने इसी शहर के बादशाह 'नमरूद' के सामने मूर्तिपूजा के विरुद्ध आवाज उठायी था। इसी शासक के खुदाई दावे के सामने सर झुकाने में इन्कार किया थी। और इसी शहर के प्रसिद्ध मंदिर की मूर्तियों को रात के अंधेरे में कुल्हाड़ी मार–मारकर तोड़ दिया था। इसी अपराध के बदले में हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) आग में डाल गये, जो अल्लाह के आदेश से गुलजार बन गयी और हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) जीवित व सही सलामत बच गये।

इस घटना के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहि0 हिजरत करके कनआन (फ़िलिस्तीन) की ओर चले गये। आधुनिक काल में खुदाई के दौरान जो प्रमाण मिले हैं, उनसे भी यह प्रमाणित होता है कि बादशाह नमरूद अपने अन्तिम काल में 'उर' की प्रजा से अपनी पूजा (इबादत) कराने लगा था। वहाँ पर मूर्ति पूजा आम थी। उर के खंडहरात से मिलने वाले बहुत से बुतों का टूटा हुआ (अंग–भंग) हाथ–पैर इस बात की ओर धयान आकृष्ट करता है कि इन्हें अवश्य ही किसी मूर्तिभंजक से पाला पड़ा होगा। उर के एक बादशाह नरअदाद या मरअदाद ने 'उर' में एक भवन बनवाया था, जिस पर यादगार के रूप में निम्नलिखित अभिलेख लिखा था।

''यह भवन नरअदाद ने उस समय बनवाया, जब उसने 'नाईद शम्स बागी' को निकाला और उर को फितने से बचाया। (उर के साथ भलाई की)'' यह अभिलेख सोलहवीं सदी में उर की खुदाई के दौरान मिला है। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या नरअदाद का अभिलेख हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) के सम्बन्ध में है? इस लेख में जिस 'नाईद शम्स बागी' को उर से निकालने और उर को फितने–फसाद से बचाने का जिक्र किया गया है और इस घटना को इतनी अहमियत दी है कि इसकी यादगार में एक बादशाह को एक भवन बनवाने की आवश्यकता पड़ी, क्या वह नाईद शम्स हज़रत इब्राहीम अलैहि0 थे? यद्यपि कुछ विद्वान अनुसंधान कर्ताओं

ने जिनका सम्बन्ध पश्चिम से है यह राय कायम की है कि इस अभिलेख का संबंध हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) से भी सौ या डेढ़ सौ वर्ष पहले का है, लेकिन कुछ पूर्वी अनुसंधानकर्ता जिनमें मुर्तज़ा अहमद खान सम्मिलित हैं, अपनी किताब 'तारीखे अक़वामे आलम' में लिखते हैं कि नरअदाद का अभिलेख हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) के ही संबंध में है, इसमें उन्हें नाईद शम्श के रूप में बताया गया है।

वास्तव में यह नाम सामी है और उस समय में अरब भू–भाग के निवासी जिनको आमतौर पर प्रचलित रूप में सामी कहा जाता है और जिन्हें सुमेरी किताबों में अमूरी और हेरी (इबरानी) का नाम दिया गया है जो अधिक संख्या में सुमेरियों के ही शासनकाल से यहाँ के शहरों और देहातों में आबाद थे। बादशाह नमरूद की जलती हुई आग से बच जाने के बाद हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) अपने परिवार या कबीले के साथ 'उर' से हिज्रत करके पहले हर्रान की ओर चले, जो पूर्वी उर्दुन की एक बस्ती थी। आपके साथ इस सफर में आपकी बीवी के भतीजे हज़रत लूत (अलैहि0) भी थे। यहाँ से आपने कनआन (फिलिस्तीन) का रुख किया। मुसलमानों और यहूदियों के उल्लेख के अनुसार हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) इस सफर में मिस्र भी गये। मिस्र में फिरऔन (उस समय का बादशाह) ने आपकी बीवी हज़रत सारा के साथ बदसलूकी करनी चाही, मगर अल्लाह के हुक्म से उसका वह हाथ सुन्न हो गया, जो हज़रत सारा की ओर बढ़ा था। फिरऔन ने हज़रत सारा से माफी माँगी और अपनी बेटी (कुछ लोगों ने कनीज लिखा है) हज़रत हाजरा को हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) के निकाह में दिया।

मिस्र से वापसी पर हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) ने हिजाज की निर्जन व जलहीन पहाड़ियों में अल्लाह के घर की नींव डाली और अपनी दूसरी बीवी हज़रत हाजरा और उनके बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहि0) को यहाँ आबाद किया। इसी पवित्र भूमि पर कुरआन के अनुसार हज़रत इस्माईल (अलैहि0) की कुरबानी की घटना घटित हुई। अल्लाह ने हज़रत इस्माईल (अलैहि0) की प्रतिष्ठा में 'ज़मज़म' का स्रोत जारी किया। मुसलमान 'वादी–ए–बतहा' को बहुत पवित्र समझते हैं। इस इबादतगाह के करीब हर साल जमा होना और उसका तवाफ़ करने की रीति अरबों में हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) के समय से चली आ रही है। हज़रत इब्राहीम (अलैहि0) ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध जो आवाज उठायी थी और एक ईश्वर की आराधना करने की जो घोषणा की थी, वह आज भी यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम के रूप में दुनिया के तीन बड़े इल्हामी धर्म के रूप में जीवित हैं।

❑❑

एक हफ्तः हिमालय .....

हिमालय की गोद में अट्ठाईस साल के अन्तराल के बाद जाना हुआ। इस अवधि में पहाड़ पर बहुत बदलाव आया है, प्रकृति से छेड़–छाड़ बढ़ी है, आधुनिकीकरण का दौर दौरा है, शिक्षा का प्रसार खूब हुआ है, विकास कार्य हुए हैं और हो रहे हैं, जलवायु में बदलाव आया है कारण ग्लोबल वार्मिंग हो या प्रदूषण, 28 साल पहले रानीखेत से गुजरते हुए जवानी में भी स्वीटर पहन लेता था, इस बार बुढ़ापे में भी स्वीटर निकालने की जरूरत न पड़ी। भौतिक और साँस्कृतिक दोनों माहौल प्रदूषित हुए हैं, मैदान से काफी लोग इधर आ गये हैं, और अपनी 'चतुराई' बिखेर रहे हैं। फिर भी पहाड़ी अच्छे हैं, बेहतर हैं। लोग अच्छे हैं।

उत्तरखण्ड सरकार अपेक्षाकृत बेहतर कार्य कर रही है। प्रकृति को प्रदूषण से बचाने के प्रयास भी दिखे। प्रशासन भी बेहतर दिखा। दुनिया में पहली बार ग्लेशियर्स को प्रदूषण से बचाने के लिये एक अथार्टी (प्राधिकरण) बनाने की कार्य योजना तैयार की गयी है जिस में वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को शामिल किया जायेगा और 'इसरो' की मदद ली जायेगी, ऐसा पता चला। उत्तराखण्ड का 65 प्रतिशत क्षेत्रफल वनाच्छदित और 20 प्रतिशत क्षेत्रफल हिमाच्छादित है। यह दोनों ही अपार सम्पदा के स्रोत हैं।

❑❑

बेपर्दगी की हिमायत क्यों ?

– डॉ0 मुहम्मद अहमद

मशहूर पत्रकार के0 विक्रमराव का जो लेख 'जनसत्ता' (नयी दिल्ली, 17 अगस्त 2010) में छपा है उसे पढ़कर ऐसा लगता है कि वे पश्चिम की उस सोच के बुरी तरह शिकार हैं जो महिलाओं को नग्न और बेपर्दा करने के लिए तरह–तरह के हथकंडे अपनाती रहती है। अंग्रेजी के पत्रकार विक्रमराव जी को इस बात पर भी एतिराज है कि फ्राँस की संसद में बुर्के पर पाबन्दी वाले विधेयक पर वोटिंग के समय सोशलिस्ट सदस्य क्यों गैर हाजिर रहे। इस सिलसिले में उन्होंने राम मनोहर लोहिया का जिक्र करते हुए उनके हवाले से लिखा कि 'जब बुर्का पहने कोई स्त्री दिखती है, तो तबीयत करती है कि कुछ करें।' विक्रमराव जी ने कई मुस्लिम देशों का उदाहरण देते हुए पर्दे के औचित्य पर सवालिया निशान लगाने की कोशिश की है, हालाँकि वे स्पष्ट नहीं कर सके कि मुस्लिम देशों में जो कदम उठे उनकी इस्लाम कितनी पुष्टि करता है।

जहाँ तक सवाल रजिया सुलताना का है, तो कोई नहीं कह सकता कि वे बेपर्दा हुईं। लड़ाई के मैदान में भी उन्होंने शालीनता और सभ्यता का बराबर लिहाज रखा। फिर पर्दे के दुरुपयोग के बारे में जो विक्रमराव जी ने लिखा है, तो इस सिलसिले में यह तथ्य सामने रहना चाहिए कि किसी भी चीज का निगेटिव इस्तेमाल हो सकता है, लेकिन इसका यह मतलब कतई नहीं है कि वह गलत ही चीज हो। इस्लाम की शिक्षा है कि बेहयाई और अश्लीलता किसी भी तौर पर प्रकट न होने पाए। हाँ, इस पर अवश्य विचार–विमर्श हो सकता है कि पर्दा को व्यवहार में कैसे लाया जाए।

लेखक ने यह भी लिखा है कि 'अलबत्ता एक तर्क जरूर प्रभावित करता है कि बुर्के के कारण नारी शरीर पर लालची पुरुषों की कुदृष्टि नहीं पड़ती।' फिर लिखते हैं कि 'ऐसा तर्क नितांत सारहीन कहलाएगा। पुरुष जो चाहे, जैसा भाए वैसा पहने, मगर महिलाएं पोशाक की गुलामी ढोती रहें?' स्पष्ट है, ये वही आरोप और कुतर्क है, जिन्हें पश्चिमी जगत से आयातित माना जाता है और इनके बारे में हर विवेकशील व्यक्ति जानता है कि ये कुतर्क महिलाओं का शोषण जारी रखने के लिए गढ़े गये हैं। इस्लाम की शिक्षाओं की प्रासंगिकता को भी देखते चलें। उन समाजों में जहाँ पर्दा व्यवहार में है, वहाँ अपराध और शोषण दूसरे समाजों के मुकाबले में कम है। फिर यह तथ्य भी स्वयं सिद्ध है कि बेपर्दगी के कारण कई नैतिक और सामाजिक समस्याएं भी पैदा होती हैं, यहां तक कि देश और समाज की समुचित उन्नति नहीं हो पाती। जब धर्मानुकूल शालीनता और शिष्टता होगी, तो समाज स्वस्थ मानदंडों पर चलता जाएगा और वास्तविक धर्म को अपना कर सर्वकल्याणकारी बन जाएगा। इस्लाम ऐसा सुसमाज चाहता है जिसमें स्त्री और पुरुष सब सभ्य व शालीन रहकर तरक्की करें, कोई किसी का हक न मारे और न ही कोई बुराई व विकारों का वाहक प्रेरक बने।

❑❑

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध है कि वह सरल भाषा में अपने लेख लिखें पाठकों से अनुरोध है कि वह सच्चा राही फैलाने में सहयोग दें।

मुस्लिम समाज

समाज सुधार

औलाद की तालीम व तरबियत

– हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिये सोपानवार व्यवस्था की आवश्यकता होती है। इस की तीन परिधियाँ हैं। इन में प्रथम घरेलू जीवन है। इस सोपान में घर के व्यक्तियों और माँ–बाप का रोल बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसी मरहले पर बुनियादी सोच तथा नैतिक आचरण की बुनियाद पड़ती है। दूसरा सोपान स्कूल का है जिस में बच्चे को दाखिल किया जाता है। उसे यहाँ जीवन से सम्बन्धित ज्ञान दिया जाता है और जीने की कला की शिक्षा दी जाती है। मुसलमान को इन दोनों मरहलों में खुदा व रसूल के बताये हुए जीवन के उसूल से आगाह करना होता है। इस की व्यवस्था और पाठयक्रम बनाने में इस का ध्यान रखना होता है। इस में इस्लामी दृष्टिकोण तथा जीवन पद्धति को समुचित जगह देने की जरूरत होती है। इसी मरहले में उस की भरपूर तरबियत होतीं है। तीसरा कार्य क्षेत्र सामाजिक है जिस में स्कूल से निकलने के बाद व्यक्ति पूरे तौर से प्रवेश करता है। और वहाँ उसे कलचर व रहन–सहन की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इन तीनों कार्य क्षेत्रों में सबसे महत्वपूर्ण घरेलू जीवन है जिन में माँ–बाप उस की देखभाल करते हैं। और इसमें विशेषकर माँ का रोल बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसका असर गहरा होता है। इस स्टेज पर बच्चा बड़ी हद तक एक गुँधी हुई मिट्टी की तरह होता है जिसके नैतिक और बौद्धिक कैफियत को बड़ी आसानी के साथ किसी साँचे में ढाला जा सकता है। बिल्कुल मिट्टी के उस बर्तन की तरह जिसे कुम्हार गीली मिट्टी से बनाता है। हमारे नबी (सल्ल0) ने इसी तरफ इशारा करते हुए फरमाया, "बच्चे असल फितरत पर पैदा होते हैं, (जो इस्लामी मिजाज के अनुसार होते हैं) फिर उनके माँ–बाप अगर यहूदी हुए तो यहूदी, नसरानी हुए तो नसरानी बना लेते हैं। अगर मजूसी हुए तो उन्हें मजूसी बना देते हैं। इसी लिये हदीसों में बच्चे की दीनी तरबियत के लिये खास तौर से ध्यान देने को कहा गया है। और दीन इस्लाम के सब से महत्वपूर्ण काम अर्थात् नमाज के सिलसिले में सात साल की उम्र हो तो उसे समझाकर उसकी आदयगी के लिये और दस साल गुजर जाने पर न करे तो सख्ती और सजा का हुक्म है। बचपन में नमाज की आदत पड़ जाये तो ज़िन्दगी भर उसकी आदत रहती है।

बचपन की फितरत और मनोविज्ञान ऐसे होते हैं कि घर में होने वाली बातें और घर के लोगों के क्रिया कलाप व किरदार बच्चे के मन मस्तिष्क पर तेजी के साथ असर डालते हैं। बच्चा सब से पहले हर देखी व सुनी चीज को समझना चाहता है। और जो भी उसे नई चीज नज़र आती है और भा जाती हैं बच्चे को उससे दिलचस्पी होने लगती है। वइ इस दुनिया में नया– नया आता है और अपने जीवन में अपने आस पास नई–नई चीजों को देख रहा होता है तो उसे यह दुनिया अपने नये–नये और ख़ुशनुमा दृश्यों और हालात की बिना पर पसन्द आती है। और वह अपने माँ–बाप के साये में उन्हें देखता है और समझने की कोशिश करता है। माँ–बाप जो बताते हैं और करते हैं, उनकी बच्चे के मन–मस्तिष्क पर गहरी छाप पड़ती है। इस लिये माँ–बाप के लिये यह बहुत जरूरी है कि वह बच्चों को इस्लामी तरीके पर ढालें और उसके मन–मस्तिष्क में इस्लामी अकीदा जमायें। माँ–बाप जो अक़ीदे का बीज उसके मन–मस्तिष्क के पटल पर बोयेंगे बच्चा आगे चल कर उनको अपनायेगा।

माँ बच्चे की ऐसी अख़लाकी

तरबियत कर सकती है जो आजीवन बाकी रहे। बच्चे से नर्मी से पेश आने में माँ ही सर्वोपरि है वही उसके आराम व राहत और इच्छाओं का सर्वाधिक ख्याल रखती है भला उससे बढ़कर बच्चे को कौन मुहब्बत कर सकता है। जो उसकी हर आवाज पर हाजिर हो, और उसके हर नाज व नखरे को सहर्ष स्वीकार करे। इसी कारण माँ को बच्चा अपना मानने लगता है। और उसकी बात को मानता है। महापुरुषों ने अपने व्यक्तित्व के विकास और शिक्षा–दीक्षा में माँ के रोल का विशेष रूप से उल्लेख अपनी आत्म कथाओं में किया है। समाज की सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण में भी माँ का बहुत बड़ा रोल होता है। वह उस घर की मालिका होती है जिसमें मानव–पीढ़ी परवान चढ़ती है। बच्चे को आगे चल कर जिन समस्याओं का सामना पड़ता है उन्हें सुलझाने में इस से रौशनी मिलती है।

इस्लामी इतिहास में मुसलमान माँओं ने रौशन कारनामे अंजाम दिये हैं। महान इस्लामी महापुरुषों की माँयें बड़ी साहसी और दृढ़ संकल्प वाली होती थीं जिन का उल्लेख अनेक महापुरुषों ने किया है।

बच्चों को वह बातें बहुत पसन्द आती हैं जो विचित्र बातों से भरी हों। वह इन्हें सुनने को व्याकुल रहते हैं। समझदार माँ–बाप बच्चों की इस प्रवृति को ध्यान में रख कर उन्हें नबियों, मुजाहिदों, रण बाँकरो, औलिया व बुजुर्गो के किस्से सुनाते हैं। कहानियों में इस्लाही (सुधारात्मक) पहलू को उभारना अच्छा होता है। जिन घरों में बच्चों को उनके शौक की कहानियाँ सोने से पहले सुनाई जाती हैं वहाँ इस इस्लाही पहलू का ध्यान रखना बहुत बेहतर होता है। इसी तरह बच्चों को कुर्आन की तालीम देना और उनके खाली समय में उनको छोटी–छोटी दुआयें याद कराना, और दुहराना उनसे सवाल जवाब करना भी लाभप्रद होता है। माँ–बाप को चाहिये कि वह बच्चों के सामने कोई ऐसी बात न करें जो उन्हें अच्छे अख़लाक से दूर कर दे और जो हया और लज्जा के विपरीत हो। क्योंकि बच्चे माँ–बाप की हर बता को चाहे वह अच्छी हो या बुरी, हर हाल में कबूल कर लेते हैं। यह भी जरूरी है कि बुरी बातों से बचने को स्पष्ट किया जाये और उनसे बाज रखने के लिये बड़े बूढ़ों की मिसाल पेश की जाये।

वर्तमान सभ्यता के असर में आकर और रोजी रोटी कमाने में मगन रहने वाले कुछ माँ–बाप अपने बच्चों को बोर्डिंग हाऊस में दाखिल कर देते हैं, ऐसी स्थिति में बेहतरीन संस्थाओं को चयन करना चाहिये औलाद की तालीम व तरबियत में घरेलू तरबियत की बुनियाद मजबूत कर के ही आगे की शिक्षा–व्यवस्था में भेजे ताकि आगे वह और माँ–बाप उलझन में न पड़ें।

स्कूल कालेजों में पहुँचने के बाद वहाँ की व्यवस्था के सिलसिले में असल जिम्मेदारी वहाँ के जिम्मेदारों की होती है। अभिभावकों के करने का काम यह होता है कि बेहतर से बेहतर स्कूल का चयन करें और फिर अपने बच्चों को वहाँ दाखिल करें। अच्छी पीढ़ी तैयार करने में अच्छी संस्थाओं का बड़ा अहम रोल है।

शिक्षण संस्थाओं के तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ्यक्रम। इन में से किसी एक के अपुर्ण और दोषपूर्ण होने की दशा में वाँछित नतीजा नहीं मिलता। अतः किसी बेहतर समाज के लिये जरूरी है कि इन तीन बुनियादी चीजों की सुव्यवस्था की गई हो।

पाठ्यक्रम शिक्षा के लिये पोषण तत्व की हैसियत रखता है। विशेषकर भाषा, साहित्य और सामाजिक विज्ञान में। पाठ्यक्रम के लिये जरूरी है कि वह नैतिक बिगाड़ और गुमराहियों के असर से पाक व साफ हो। अच्छे और नेक इस्लामी समाज को सामने रखकर पाठ्यक्रम तैयार किया जाये। और जो अपने पढ़ने वालों के मूल्यों और पसन्द के अनुसार हो।

अकसर तालीमी नजरिये जो इस दौर में योरोप में संकलित हुए और पूरब में भी जिन्होंने सिक्का जमाया, उनमें सब ने विचार की आजादी को अपने नजरियः की बुनियाद बनाया। इन में से अधिकाँश ने मजहब की बालादस्ती और जीवन के क्षेत्र में इस के मार्ग दर्शन को नकार दिया।

शेष पृष्ठ 7

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

– मुफ्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

–अनु0 : फौजिया सिद्दीकी

प्रश्न : कुर्बानी के बड़े जानवर पड़वा में 6 लोग साझी हुए, सब ने अपने छठे हिस्से की कीमत अदा की, लेकिन जानवर जब्ह किया गया सात लोगों की तरफ से, 6 साझीदार और सातवां नाम अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का था ऐसी कुर्बानी का क्या हुक्म है?

उत्तर : इस उम्मत के लोगों का अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ा गहरा जजबाती लगाव है उसी लगाव के तहत ऐसा किया गया। चाहिये था कि सभी छः लोग सातवें हिस्से की कीमत का एक शख्स को मालिक बना देते और वह एक शख्स अकेले अपनी तरफ से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानिब से कुर्बानी कर देता, या सातवें हिस्से की कीमत एक शख्स अदा करता और दूसरे साझीदारों से हर एक से जानवर की कीमत का सातवां हिस्सा लिया जाता तो कुर्बानी सहीह होती। लेकिन सातवें हिस्से में छः लोग शरीक हो ऐसी सूरत में अहनाफ के नजदीक किसी की कुर्बानी न होगी। अहनाफ के नजदीक बड़े जानवर में अगर एक से जियादा लोग साझी हो तो किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो जब सातवें हिस्से में छः लोग साझी होगे तो सातवां हिस्सा पूरा न रहेगा और किसी की भी कुर्बानी न होगी।

प्रश्न : एक बकरा कई लोग मिलकर खरीद कर कुर्बानी करे तो कुर्बानी होगी या नहीं?

उत्तर : एक बकरे में कई लोग साझी होकर कुर्बानी करें या बड़े जानवर पड़वा आदि का एक हिस्से में (सातवें हिस्से के एक हिस्से में) कई लोग साझी हो तो गोश्त हलाल रहेगा मगर कुर्बानी किसी की न होगी।

प्रश्न : अगर बड़े जानवर में कोई सातवां हिस्सा कुर्बानी के लिये नहीं सिर्फ गोश्त खाने के लिये ले तो ऐसी कुर्बानी का क्या हुक्म है?

उत्तर : ऐसी सूरत में किसी की भी कुर्बानी न होगी, अहनाफ के यहां जरूरी है कि बड़े जानवर के सभी साझीदारों की नीयत कुर्बानी या अक़ीक़ा की हो।

यह तमाम जवाबात देवबन्द और बरेली से मालूमात ले कर लिखे गये हैं।

प्रश्न : अब्दुन्नबी व अब्दुल मुस्तफा नाम रखना कैसा है?

उत्तर : इन नामों से जहां एक तरफ नबी की मुहब्बत की खुशबू आती है वहीं दूसरी तरफ शिर्क के शूब्हे की तलवार सर पर लटकती नज़र आती है। इस लिये ऐसे नामों से बचना चाहिए। पहलों ने जो ऐसे नाम रख दिये उन को नबी की मुहब्बत से जोड़े और खुद से ऐसे नाम न रखें। एक हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान नाम अच्छे हैं या फिर किसी नबी के नाम पर नाम रखे। लिहाजा लड़कों के नाम अब्दुर्रहीम, अब्दुल करीम, अब्दुल मन्नान आदि या किसी नबी का नाम रखे जैसे मुहम्मद, इब्राहीम, इस्माईल आदि या किसी सहाबी के नाम पर रख ले जैसे अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली आदि इन के अतिरिक्त दूसरे ऐसे नाम भी रखना ठीक है जिनके माने खराब न हों जैसे जमाल, कमाल, अजमल आदि।

❑❑

हम आपके परामर्श का स्वागत करेंगे।
सम्पादक

मोतमद माल नदवतुल उलमा जवारे रहमते रब में

मोतमद माल नदवतुल उलमा जनाब प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी जिनकी उम्र लगभग 85 साल थी वह दिल के मरीज थे उन पर दिल का दौरा पड़ा दिल के अस्पताल (लारी कार्डियालोजी लखनऊ) में दाखिल किये गये। वक्त पूरा हो चुका था जाँबर न हो सके और 3 शव्वाल 1431 हि0 (13 सितम्बर 2010 ई0) छः बजे शाम को अपने रब के हुक्म पर लब्बैक कहते हुए इस दारे फानी से दारे बाकी को कूच फरमाया (इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन)। जनाब प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी एक तालीम याफ्ता खुशहाल खान्दान से तअल्लुक रखते थे, उनके आबा व अजदाद जौनपुर के थे लेकिन उनके वालिद मास्टर अब्दूस्समी सिद्दीकी नदवे से मुत्तसिल अपना जाती मकान बनाकर लखनऊ के बाशिन्दा हो गये थे। वह मुमताज इन्टर कालेज के प्रिन्सपल थे। रिटायर होने के बाद दारूलउलूम नदवतुल उलमा में अंग्रेजी के उसताज हो गय थे और आखिर उम्र तक ये खिदमत अनजाम देते रहे। मशहूर अदीब व तन्जनिगार प्रोफेसर रशीद अहमद सिद्दीकी, प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी के मामू थे।

मास्टर अब्दुस्समी सिद्दीकी साहब ने अपने सभी लड़कों को आला तालीम दिलाई और सब खुशहाल हैं प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी ने अपने वालिद के नक्शे कदम पर टीचिंग की लाईन इख्तियार की और तरक्की करते हुए शाहजहाँपुर डिग्री कालेज के प्रिन्सपल का मन्सब हासिल किया वह उस कालेज में उर्दू और फारसी के उस्ताद भी रहे रिटायर होने के बाद वह अपने लखनऊ के मकान में आ गये उस वक्त नदवतुल उलमा में मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0) के निजामत का दौर था जनाब हिदायत हुसैन के इन्तिक़ाल पर जनाब प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी को मोतमद माल चुना गया। हज़रत मौलाना अली मियाँ साहब (रह0) की वफात पर हज़रत मौलाना मोहम्मद राबे हसनी नदवी नाजिम नदवतुल उलमा हुए वह आम तौर से सफर पर जाया करते थे इसलिए जनाब प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी को नायब नाजिम मुकर्रर फरमा दिया था। प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी साहब इन दोनो मनसबों (मोतमद माल व नायब नाजिम) को आखिर उम्र तक बड़े अच्छे ढंग से निभाया।

प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी का इन्तिकाल 13 सितम्बर की शाम को हुआ था नमाजे जनाजा 14 सितम्बर की असर बाद हुई अगरचे दारूल उलूम में तातील थी फिर भी नमाजे जनाजा में बड़ी तादाद शरीक थी जिसमें खासी तादाद लखनऊ के अमाईदीन की थी नमाजे जनाजा हज़रत मौलाना राबे साहब नदवी ने पढ़ाई थी। डालीगंज के कबरिस्तान में तदफीन अमल में आई अल्लाह तआला उनकी कबर पर रहमत नाजिल फरमाए और उनकी करवट–करवट बखशिश फरमा कर आला इल्लीय्यीन में जगह दें, शोकाकुल परिवार में चार बेटे और दो बेटिया हैं सब अल्लाह के करम से खुशहाल हैं।

❑❑

बकरईद की कुर्बानी

❖ 9 ज़िल्हिज्जा की फज्र से 13 ज़िल्हिज्जा की अस्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बअ़द एक बार, तक्बीरे तशरीक़ कहना वाजिब है। तक्बीरे तशरीक़ यह है "अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल् हम्द्" मर्द ज़ोर से कहें औरतें आहिस्ता।

❑❑

किस्त 29

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षक बन्धुओं के लिये

- डॉ0 सलामतुल्लाह

पाठ की तैयारी

पढ़ाई के सिलसिले में एक सवाल पैदा होता है – "उस्ताद और बच्चे के मामले में किसी और को दखल देने की क्या जरूरत है?" हर उस्ताद को अपने तर्ज पर पढ़ाने की आजादी होनी चाहये। और बच्चे को अपने तौर से समझने और याद करने की। उस्ताद को किसी एक निर्धारित रास्ते को अपनाने पर मजबूर करना बड़ी ज्यादती होगी। निःसन्देह अच्छी पढ़ाई की सब से पहली शर्त यह है कि टीचर को पूरी आजादी हो। लेकिन आजादी का ये मतलब नहीं है कि पढ़ाने के सिद्धान्त की पाबन्दी न की जाये। हर पेशे और हर काम को ढंग से करने के लिये कुछ विशेष उसूल और कायदे जानना और उनको व्यवहार में लाना जरूरी होता है। अच्छे डॉक्टर के लिये चिकित्सीय कानून का पाबन्द होना जरूरी है और इससे उसका व्यक्तित्व नुकसान नहीं उठाता। इसी तरह इंजीनियर इंजीनियरिंग के उसूल पर चलता है और इस से वह मात्र मशीन का पुर्जा नहीं बन जाता। आजादी का सही एहसास रखने वाला शिक्षक पढ़ाने "रामाजियत" और तालीम के सिद्धान्त पर कारबन्द होने के बावजूद अपनी आजादी को बनाये रखता है।

टीचर के प्रतिदिन का काम एक ढर्रा बन कर रह जाना वास्तव में एक आपत्तिजनक बात है। पाठ्यक्रम के चयन के मामले में तो समाज और राज्य उसके कार्य क्षेत्र में बजा तौर पर दखल देते हैं और वह स्वाभाविक रूप से इसे सहन भी कर लेता है। लेकिन जब वह निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाना शुरू करता है तो उसका यह मुतालबा न्यायोचित है कि उसको पूरी आजादी होनी चाहिये। वह जो विधि उचित समझे अपनाये इस में किसी प्रकार का बाहरी हस्तक्षेप उसके लिये असहनीय है। लेकिन हम शिक्षण को पेशे के तौर पर केवल तभी अपना सकते हैं जब हम उसके वैज्ञानिक तरीकों से परिचित हों जैसा कि दूसरे पेशों में जरूरी होता है। हम अपने काम को जितना अधिक सिस्टेमेटिक ढंग से करेंगे उतना ही लाभप्रद नतीजा निकलेगा। याद रहे कि हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि ऐसी बेलोच विधियाँ गढ़ी जायें जिन से टीचर जरा भी इधर–उधर न हट सके। बल्कि

अनु0: एम0 हसन अंसारी

हमारा मतलब यह है कि टीचर के व्यक्तित्व का पूरा ध्यान रखते हुए उस के मार्गदर्शन के लिये कुछ ऐसे सामान्य नियम पेश किये जायें जो मनोविज्ञान के अनुकूल और उचित हों और टीचर के दैनिक कार्य में मदद दें। जो टीचर ऐसे उसूलों के वजूद से इन्कार करता है और दावा करता है कि उसके तरीके इतने अनोखे हैं कि दूसरे टीचर्स के तरीकों से उसका मुकाबला नहीं किया जा सकता, वह या तो अपने साथियों के काम से बिल्कुल अनभिज्ञ है या पढ़ाने के फन से एकदम बेबहरा। व्यक्तिगत विशिष्टताओं की अनदेखी करने के बाद भी निश्चित ही कुछ आम उसूल बाकी रह जाते हैं जिन पर अच्छी तालीम का दारोमदार है। जो इन उसूलों को महत्व नहीं देता है या तो असाधारण व्यक्ति है जो पैदाइशी तौर पर टीचर है अथवा, जैसा कि प्रायः देखा गया है, बिल्कुल 'अनपढ़' जिसने किसी मजबूरी से पढ़ाने का पेशा इख्तियार कर लिया है। इन उसूलों पर समझ बूझ कर अमल करने से मामूली टीचर बड़ी ग़ल्तियों से बच सकता है। और योग्य अध्यापकों को इन

से कोई नुकसान पहुँचने की आशंका नहीं है। यदि शिक्षण की प्रक्रिया का एक आम तरीका मालूम कर लिया जाये तो इस का मतलब यह नहीं होगा कि वह टीचर को सोचने बिचारने से दूर रखे बल्कि यह होगा कि वह इस के चिन्तन मनन में व्यवस्था पैदा करे।

पाठ के विधिवत सोपान

यह एक प्रचलन सा हो गया है कि नये टीचर को पाठ शुरू करने से पहले पाठ संकेत लिखने पड़ते हैं। अगर किसी ने यह काम किया है तो इसे एक नज़र से मालूम हो सकता है कि वह पाठ किस तरह पढ़ाना चाहता हैं किन बातों पर पाठ की बुनियाद रखी गई है और क्या उद्देश्य प्राप्त करने हैं। संकेतों का एक निर्धारित ढाँचा बनाने के लिये अनेक प्रयास किये गये हैं। इस में सुलर का नाम बहुत मशहूर हैं वह लायफ सिग यूनीवर्सिटी में सन् 1684 से 1882 तक एजुकेशन का प्रोफेसर था। वास्तव में उसकी तजवीज हर्बार्ट के मशहूर सिद्धान्त पर कायम है कि ज्ञानार्जन में कुछ विशेष सोपानों से गुजरना होता है। सुलर ने इस सिद्धान्त को व्यवहार में प्रत्येक पाठ को क्रमबद्ध करने में इस्तेमाल करने की कोशिश की और पाठ के विधिवत पाँच सोपान निर्धारित किये।

सीखने की प्रक्रिया के सोपान

हर्बार्ट के सिद्धान्त के अनुसार सीखने की प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को स्पष्ट करने के लिये हम एक मिसाल पेश करते हैं :–

एक व्यक्ति साइकिल चलाना किस तरह सीखता है? यदि हम तनिक सोचें तो इस प्रक्रिया में निम्मवत क्रमबद्धता दिखेगी :–

(1) सीखने की इच्छा पैदा होना, जरूरत का एहसास और उस खुशी की कल्पना जो सीख जाने के बाद हासिल होगी, सीखने पर आमादा करती है। और फिर व्यक्ति इस की कोशिश शुरू कर देता है।

(2) जो सीखना है उसमें और सीखी हुई चीज में सम्बन्ध पैदा करना। इन्सान पैरों से चलता है और साइकिल पैरों के जरिय: पैडिल घुमाने से चलाई जाती है। इन्सान अपने मन में इन दोनों चीजों में तअल्लुक पैदा कर लेता है।

(3) नई परिस्थिति के अनुसार नई प्रतिक्रिया होना। जब वह साइकिल चलाना शुरू करता है तो उसका शरीर कभी एक तरफ ज्यादा झुक जाता है और कभी दूसरी तरफ। वह अपना सन्तुलन कायम रखने के लिये अपने शरीर को संभालता है। और दोनों हाथों से हैंडिल को उचित ढंग से घुमाने का अभ्यास करता है। इस प्रकार अनुभव से वह यह मालूम करता है किन अंगों से साथ– साथ काम लेना साइकिल को अच्छी तरह चलाने में मदद देता है।

(4) कामयाब अनुभव को बार–बार दोहराना यहाँ तक कि पूरी महारत हासिल हो जाये।

अब मान लिजिये कि वह व्यक्ति किसी दूसरे से साइकिल चलाना सीखता तो सीखने में कम समय लगता। क्योंकि सीखाने वाला चलने और साइकिल चलाने के खास फर्क को कर के बता देता कि साइकिल चलाते समय सन्तुलन कायम रखने के लिये हैंडिल को किस तरह मोड़ना चाहिये ताकि सवार और साइकिल दोनों सीधे हो जायें। नई मालूमात के खास पहलुवों को इस तरह पेश करना सही अर्थों में सिखाना है। और इन में दक्षता प्राप्त करन लेना "सीखना" है।

सीखने के लिये किसी उत्प्रेरक का होना, नई चीजें और पहले के ज्ञान में तअल्लुक पैदा करना, नई प्रतिक्रिया होना, कामयाब अनुभवों का दोहराना यहाँ तक कि काम सहज ही होने लगे। सिखाने की प्रक्रिया में सिखाने की विषय वस्तु का चयन, उसे पाने के लिये सीखने वाले को आमादा करना, प्रभावी प्रस्तुतीकरण, नये और पुराने ज्ञान में ताल–मेल बिठाना और दोहराना।

जारी.....

सह-सम्पादक हिन्दी मासिक 'सच्चा राही' लखनऊ

हबीबुल्ला आज़मी का इन्तेक़ाल

- एम0 हसन अंसारी

पूर्व प्रिंसिपल जी0आई0सी0 हुसैनाबाद, लखनऊ व पूर्व सहायक पाठ्य पुस्तक अधिकारी, उत्तर प्रदेश

हबीबुल्ला आज़मी साहब, मेरे परम मित्र, मुझ से दस साल बड़े और मेरे हमकार साथी (Colleague सहकर्मी) का तीन सितम्बर 2010 (23 रमजानुल मुबारक 1331 हिज्री, शुक्रवार) को संक्षिप्त बीमारी के बाद लखनऊ में लगभग साढ़े चार बजे सायं इन्तेकाल हो गया।

"ऐ ईमान वालों! कूव्वत (शक्ति) प्राप्त करो सब्र और नमाज से। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। जो कोई भी मारा जाये अल्लाह के रास्ते में उसे मुर्दा मत कहो बल्कि वह तो जिन्दा है लेकिन तुम को अभी पता नहीं चलता। हम जरूर आजमायेंगे तुम को खौफ़ और भूख से और कुछ माल और जान के नुकसान से और फलों की पैदावार के घाटे में भी, ऐसे मौके पर सब्र करने वालों को खुशखबरी सुना दो, जब भी ऐसे लोगों पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं हम सब अल्लाह के हैं और उसी की तरफ पलट कर जाने वाले हैं।"

(कुरआन 2–153–156)

आज़मी साहब ने ज़िन्दगी की तिरासी बहारे देखीं। वह तीन जनवरी 1928 ई0 को जिला आजमगढ़ के मुस्लिम बाहुल्य कस्बा मऊ, जो अब एक जिला है, में पैदा हुए। शुरू सितम्बर में जब उन्हें रक्तचाप (ब्लड़ प्रेशर) की समस्या हुई और उन्हें अस्पताल ले जाया गया उस दौरान प्रोफेसर वसीम अख्तर, वाइस चाँसलर इन्टिग्रल यूनीवर्सिटी जो उनके ब़ड़े कद्रदान रहे हैं, उन के पास रहे। मुनासिब दवा इलाज की कोशिश की गयी लेकिन वक्त पूरा हो गया और वह चले गये। दूसरे दिन दोपहर बाद नदवा में नमाज़े जनाजा दो बजे प्रिंसिपल डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी ने पढ़ाई और साढ़े तीन बजे डालीगंज के कब्रिस्तान में सुपुर्द खाक किये गये।

मरहूम के पसमान्दगान में तीन बेटे और दो बेटियाँ हैं। पत्नी का इन्तेकाल कोई तीन साल पहले हो चुका है। भाई आज़मी साहब के छोटे भाई प्रोफेसर मुहम्मद जाहिद, अवकाश प्राप्त विभागध्यक्ष, भौतिकशास्त्र, जामिया मिल्लिया देहली, दिल्ली में रह रहे हैं। सोगवारान (शोकाकुल) में इनके अलावा हजारहा हजार शिष्य, मित्र और हमकार साथी भी हैं।

"खुदा बख़्शे हजारों खूबियाँ थीं
जाने वाले में"

हबीबुल्ला आज़मी साहब की प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा मऊ, जिसे उन दिनों मऊनाथ भंजन कहा जाता था, में हुई। उन दिनों आजादी की लड़ाई के रौशन सपूतों में विशिष्ट मौलाना हुसैन अहमद मदनी का प्रायः आगमन होता था, उनके भाषणों का आज़मी साहब के व्यक्तित्व–विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस का साफ असर '1942 में भारत छोड़ों आन्दोलन' के दौरान जब वह हाई स्कूल के विद्यार्थी थे, उनकी गतिविधियो में देखने को मिलता है। (इस उद्‌गार के अन्त में उनका संस्मरण पढ़ा जाये)। इण्टरमीडियट आज़मी साहब ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित कालेज ई0सी0सी0 (ईविंग क्रिश्चियन कालेज) से पास किया। और बी0ए0, बी0टी0 अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ से 1948 में किया जहाँ वह नेशनलिस्ट मुस्लिम स्टूडेन्ट फेडरेशन के सदस्य भी रहे। इस के बाद उन्होंने इलाहाबाद यूनीवर्सिटी से 1950 में भूगोल में एम0ए0 किया, उन दिनों भूगोल के विभागध्यक्ष विख्यात भूगोल वेत्ता प्रोफेसर आर0एन0दूबे जी थे। (इन पंक्तियो के लेखक ने इ0वि0वि0 से 1960 में भूगोल में एम0ए0 किया है)। छात्र जीवन में आज़मी साहब एक माह जेल में भी रहे जब उनकी उम्र चौहद साल की थी।

शेष पृष्ठ 19

इस्लाम और पर्यावरण

– डॉ0 बदरूल इस्लाम

पर्यावरण में बिगाड़ का मुख्य कारण इन्सान की और अधिक जुटा लेने और पा लेने की प्रवृति (हरीस तबीयत) और नष्ट करने वाली फितरत है। कुरआन इसे 'बेजा खर्च' कहता है। इस के विपरीत कुरआन इन्सान को मध्यम मार्ग, सन्तुलन और सुरक्षा की शिक्षा देता है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षायें भी ऐतदाल पसन्दी (मध्यम मार्ग प्रिय) की सीख देती हैं। आप ने फरमाया कि ऐतदाल इख्तियार करो, अगर तुम पूरे तौर पर इसे न अपना सको तो यथासम्भव ऐतदाल पर कायम रहो।

प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग–इस्लामी दृष्टिकोण से

इस्लामी शिक्षायें इन्सान को आसानी से प्राप्त होने वाले अधिकांश प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, धरती और जंगलात आदि के दोहन में बेजा खर्च को पसन्द नहीं करतीं। कम और विलुप्त प्राय प्राकृतिक संसाधन (खनिज और जानवर आदि) के प्रयोग की सशर्त इजाज़त है। शर्तें यह है कि औसत और संतुलित हो, और इन प्राकृतिक संसाधनों के अस्तित्व का सामान करना। मौजूदा नस्लों के अलावा प्राकृतिक संसाधनों में आने वाली नस्लों का भी हक़ है।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

खुदा ने बड़ी जतन से तमाम सृष्टि की रचना की। और उन्हें एक दूसरे के सहयोग पर निर्भर रखा। सृष्टि की हर चीज अपने अस्तित्व के उद्देश्य की पूर्ति में व्यस्त है। इस प्रकार यह तमाम जानदार और बेजान एक बहुमूल्य धरोहर करार पाती हैं। इनके अस्तित्व से दुनिया में एक सन्तुलन पैदा होता है जो सारी सृष्टि के लिये लाभप्रद और जरूरी है। अगर इन्सान इस सन्तुलन में खलल डाले, इन प्राकृतिक संसाधनों का शोषण करे या इन्हें नष्ट करे, इन्हें प्रदूषित करे तो वह खुदाई इरादे के खिलाफ काम करेगा। मनुष्य के ओछेपन, लोलुपता तथा स्वार्थ ने हमेशा सृष्टि के इस सन्तुलन व न्याय को बार–बार प्रभावित किया है।

पानी

जल ही जीवन है। कुरआन की आयत नम्बर 19–15, 41–24 और 53–20 में पानी के महत्व का उल्लेख है। पानी तहारत के लिये एक जरूरत है। शारीरिक और कपड़ों की पाकी के बिना किसी इबादत की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। हर वह काम जो पानी के जीवनदायी और समाजी कामों में रूकावट डाले या उसे नाकाबिले इस्तेमाल बनाये जैसे उसे बर्बाद करे या गन्दा करे ऐसे तमाम काम जीवन को तबहा करने वाले समझे जायेंगे। फ़िक़ह का यह मशहूर कायदा है कि 'हराम की तरफ ले जाने वाले साधन भी हराम होते हैं।

हवा

सारे प्राणी हवा पर निर्भर रहते हैं जिस के बिना वह चन्द मिनट भी जिन्दा नहीं रह सकते। इस्लाम उन तमाम बातों को मना करता है जो वायु को प्रदूषित करे और उस का असर जानदारों पर पड़े।

मिट्टी

कुरआन कहता है 'ज़मीन जानदारों के कियाम का जरियः है। (55–10) इन्सान की रचना भी सर्वप्रथम मिट्टी से हुई। (30–20) कुरआन हमें बार–बार ज़मीन की पैदावार और उससे प्राप्त होने वाले फलों के इन्सानों के लिये फायदा उठाने की याद दिलाता है। इस्लाम भूमि की उर्वरता बनाये रखने और उसे हर प्रकार के नुकसान से बचाये रखने की तालीम देता है।

वनस्पति और जीव–जन्तु

वनस्पति प्रकाश के विकिरण के जरियः भोजन तैयार करते हैं। वनस्पति से ही हमें गल्ला, फल और सब्जियां प्राप्त होती है। वनस्पति हवा की सफाई का भी काम करती

है। वह ज़मीन के कटाव को रोकती हैं पानी को संचित रखती है।

जीवन–जन्तु से हमें भोजन, ऊन, चमड़ा और दूध प्राप्त होता है। दवाओं के काम भी आते हैं। माल ढोने के काम आते हैं।

हमारे नबी (सल्ल0) ने हमें अपने जानवरों की खुराक, उनके आराम और हिफाजत के बारे में स्पष्ट निर्देश दिये हैं। आपने डराया है कि जो व्यक्ति किसी जानवर को भूखा, प्यासा मरने के लिये छोड़ दे उसे आखिरत में जहन्नम का अजाब भुगतना पड़ेगा। इस्लाम जानवरों के अधिकारों को संरक्षण प्रदान करता है।

इस्लामी तालीमात तमाम मखलूक (प्राणी जगत) की भलाई और उनके बीच सम्मिलित हितों का ध्यान रखते हुए मामला करने का निर्देश देती हैं।

फौजी कार्यवाइयों में प्रत्येक दशा में प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण सन्तुलन का संरक्षण किया जाना चाहिये।

ध्वनि–प्रदूषण

इस्लाम बुलन्द आवाज को सखती से ना पसन्द करता है। आवाज न बहुत ज्यादा बुलन्द हो और न ही इतीन धीमी कि सुनाई न दे। (19–31), (2–49)

पर्यावरण संरक्षण पर कई वैश्विक (ग्लोबल) समझौते किये जा रहे हैं किन्तु पश्चिमी देश, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि जो कि अस्सी प्रतिशत कार्बनडाई ऑक्साइड के निकालने वाले और पर्यावरण प्रदूषण के बड़े जिम्मेदार हैं, इन समझौते से कतरा रहे हैं।

दुनिया के मुसलमानों को चाहिये कि पर्यावरण संरक्षण के लिये न केवल यह कि अपना रोल अदा करें, बल्कि इस से सम्बन्धित इस्लाम की तालीमात को बड़े पैमाने पर आम करें।

(मिल्ली इत्तेहाद, दिल्ली अगस्त 2010 से साभार)

❑❑

हबीबुल्ला आज़मी का इन्तेकाल

हबीबुल्ला आज़मी साहब ने नौकरी इलाहाबाद से शुरू की जहाँ वह मजीदिया इस्लामिया कालेज में चार साल अध्यापक रहे, जिसे के बाद उनका कमीशन (लोक सेवा आयोग) से सेलेक्शन हो गया और राजकीय सेवा में उनकी प्रथम नियुक्ति भूगोल अध्यापक के पद पर राजकीय विद्यालय हरदोई में हुई। जी0आई0–सी0 इलाहाबाद, रायबरेली, हुसैनाबाद, चमोली में उन्होंने शिक्षण कार्य किया, सहायक पाठ्यपुस्तक अधिकारी उ0प्र0 रहे और 1986 में प्रधानाचार्य जी0आई0सी0 हुसैनाबाद के पद पर कार्य करते हुए रिटायर हुए।

रिटायरमेन्ट के बाद दीनी तालीमी कौंसिल उ0प्र0 में कार्यालयाध्यक्ष रहे बाद मे उसके सेक्रेट्री भी रहे और 2002 से अब तक हिन्दी मासिक 'सच्चा राही', नदवा लखनऊ के सह–सम्पादक रहे। हबीबुल्ला आज़मी साहब गवर्नमेन्ट पेंशन वेल्फेयर आर्गनाईजेशन यू0पी0 के सक्रिय सदस्य भी रहे।

मैंने हबीबुल्ला आज़मी साहब को जुलाई 1975 से जाना, जब उनका रा0इ0का0 रायबरेली से लखनऊ ट्राँस्फर हुआ और मैं उनकी जगह पर रा0इ0का0 बाँदा से रायबरेली स्थानान्तरित हो कर आया। मुलाकात एक अन्तराल के बाद हुई।

सन् 2003–2004 में उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों में मंजूर शुदः पढ़ाई जा रही इकत्तीस किताबों का दीनी तालीमी कौंसिल उ0प्र0 ने जब जायजः (समीक्षा) राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण से लेने का इरादा किया तो यह काम हबीबुल्ला आज़मी साहब और मेरे जिम्मे किया गया, और यह काम बहुत अच्छे एंग से अंजाम पाया।

सैयद अतहर हुसैन आई0सी0–एस0 के खुलासा'–ए–कुरआन को आज़मी साहब ने हिन्दी में कर के मुझे देखने को कहा, मेरे देखने के बाद "कुरआन का सन्देश" नाम से किताब प्रकाशित हुई। भाई आज़मी साहब की करम की गठरी में इस पोटली का बड़ा वजन होगा ऐसी हम आशा करते हैं। और भी कई कार्य इस तरह के आज़मी साहब ने किये।

हबीबुल्ला आज़मी साहब ठोस कार्य के पक्षधर थे, औपचारिक्ताओं में समय नष्ट न करते, दिल के साफ, हिम्मत वाले, सरल स्वभाव, (निर्मल) और कूलमाइन्डेड होकर काम करने वाले ऐसे थे आज़मी साहब।

❑❑

किस्सा पाँच

इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?

- अ़ल्लामा सै0 सुलेमान नदवी (रह़0)

संकलन- नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

सहिष्णुता का प्रभाव

हिन्दः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खानदान की घोर विरोधी थी। उहद युद्ध में इस्लाम के दाहिने हाथ समझे जाने वाले हज़रत हम्ज़ा (रज़ि0) के पेट को चीरा था। उसी ने उनका जिगर निकाल कर चबाया था जिसको निगल न सकी, और उगल दिया था। उसी ने कुछ शहीदो के नाक–कान काट कर गले का हार बनाया था, वह मक्का विजय के समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में इस्लाम लाने हेतु उपस्थिति हुई और अब भी गुस्ताखी से बाज न आई परन्तु आपके शिष्ट तथा शालीन व्यवहार को देखकर इतना प्रभावित हुई और अनायास बोल उठी कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा)! इस धरती पर आपके घराने से अधिक कोई घराना (मेरी दृष्टि में घृणा का पात्र) न था किन्तु आज आपके घराना से अधिक कोई घराना प्रिय नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये सुनकर कहा कि खुदा की कसम हमारा भी यही हाल था? (मुस्लिम)

आदर्श व्यवहार का प्रभाव

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक यहूदी आलिम (विद्वान) का कर्ज था। उसने वापस माँगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि इस समय मेरे पास कुछ नहीं है। उसने कहा कि मैं तो ले ही कर टलुँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि ठीक है मैं तुम्हारे साथ बैठता हुँ। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर (दोपहर) से लेकर फजर (भोर) तक उसके साथ बैठे रहे। सहाबा (रज़ि0) उसकी इस अशिष्टता पर नाराजगी जताई और आपके पवित्र दरबार में प्रार्थना की कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा एक यहूदी ने आपको रोक रखा है। आपने कहा हाँ, किन्तु मुझे अल्लाह ने इससे मना किया है कि मैं किसी ग़ैर मुस्लिम या किसी अन्य पर अत्याचार करूं। दिन चढ़ा तो यहूदी ने कल्मा पढ़ा और मुसलमान होकर कहा मैंने अपनी आधी सम्पत्ति अल्लाह के रास्ते में दान दे दी। मैंने अशिष्टता इसलिये की कि तौरात में सन्देष्टा के ज़ो व्यवहार लिखे हैं उनका अनुभव करूं। (मिश्कात)

आदर्श व्यवहार तथा चमत्कार का प्रभाव

एक बार आप किसी यात्रा पर थे और पानी साथ न था। सहाबा (रज़ि0) ने प्यास की शिकायत की। आपने एक सहाबी (रज़ि0) के साथ हज़रत अली (रज़ि0) को पानी की खोज में भेजा। रास्ते में एक औरत ऊँट पर पानी की दो मश्के भर कर जा रही थी। दोनों श्रीमान उसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गए। आपने बर्तन मंगवाए और मश्कों के मुँह खोल दिये। सहाबा (रज़ि0) ने बारी–बारी से पानी पीना शुरू किया। वह खड़ी ये तमाशा देखती रही। पीने के पश्चात उसके श्रम के बदले में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुजूर का आटा और सत्तू थोड़ा–थोड़ा लोगो से लेकर, कपडे में बाँध कर उसके ऊँट पर रखवा दिया। वह घर पहुँची तो लोगों ने देर से आने का कारण पूछा। उसने बताया कि रास्ते में मुझसे दो व्यक्ति मिले और वह उस व्यक्ति के पास ले गए जिसको लोग अधर्मी कहते हैं, खुदा की क़सम! वह या तो इस आकाश तथा धरती के मध्य सबसे बड़ा जादूगर है या वास्तव में वह अल्लाह का सन्देष्टा है।

आप (सल्ल0) के पवित्र चेहरे का प्रभाव

इन्सान का चेहरा सत्य का

दर्पण है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक–एक अदा सच्चाई और मासूमियत की खूबसूरत तस्वीर थी। आप (सल्ल0) का चेहरा दमकता रहता था। आवाज रौबदार थी। उन सभी विशेषताओं का सामूहिक प्रभाव दिलों को अपनी ओर खींच लेता था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि0) जो इस्लाम लाने से पहले यहूदी धर्म के आलिम (विद्वान) थे। आपके पवित्र चेहरे को देखकर अनायास बोल उठे कि "ये झूठे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता। (तिर्मिजी पृ0सं0 : 409)। इसी आकर्षण की स्वीकारोक्ति का प्रदर्शन एक देहाती की जबान से इन शब्दों में हुआ कि "ये मुबारक चेहरा है" (अबूदाऊद)। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के दरबार में पहुँचने के साथ ही ये असर आँखों के रास्ते दिल में पहुँच जाता। अबू राफे नामक एक व्यक्ति कुरैश की ओर से दूत बनकर आए ज्योंहि दृष्टि पवित्र चेहरे पर पड़ी तो प्रभावित हुए बिना न रह सके। इस्लाम स्वीकार किया और आपकी गुलामी को गर्व समझा।

(असाबः व इस्तेआब)

प्रचार–प्रसार की संस्था

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तक मक्का में रहे, स्वयं एक–एक के पास जाते और सत्य का सन्देश सुनाते। शहर से निकल कर मक्का के आस–पास क्षेत्रों में जाकर आते–जाते लोगों को शुभ समाचार सुनाते। ये भी दिलचस्प है कि खुदा ने अपने धर्म का मुख्यालय मक्का में बनाया जो अरब का मुख्य शहर था। हज के मौसम में सभी कबीले के लोग यहाँ आया करते थे। आप (सल्ल0) वर्षों हज के मौसम में एक–एक कबीले के पास जाते और खुदा का सन्देश देते। उसी वार्षिक प्रचार से इस्लाम का वह समूह हाथ आया जिसका नाम अन्सार है जो इस्लाम का सबसे शक्तिशाली समर्थक व सहयोगी बनकर उभरा।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन अनथक प्रयासों से मक्का में सैकड़ों लोग मुसलमान हो चुके थे किन्तु कबीला कुरैश के अत्याचार के कारण वह देश छोड़ने पर विवश हुए। आप (सल्ल0) के मशवरे से वह हब्शा (इथोपिया) की ओर चले। इस यात्रा का उद्देश्य भी दिलचस्प था। उत्पीड़ित मुसलमानों के देश त्याग ने ये अवसर प्रदान किया कि वह जहाँ–जहाँ गए इस्लाम का सन्देश पहुँचाते गए। इस प्रकार यमन और इथोपिया (हब्शः) में इस्लाम फलने–फूलने लगा। मक्का में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद आम मुसलमानों में सबसे पहले प्रचारक हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) थे। मक्का के बहुत से प्रतिष्ठित घरानों के युवा उनके निमंत्रण पर इस्लाम के अनुयायी बने।

कुर्आन के माध्यम से इस्लाम स्वीकार करना

पवित्र कुर्आन जिस प्रकार प्रभावकारी और हृदय को झकझोरने वाली शैली से उपदेश देता है कि वह सभी जो अल्लाह के अस्तित्व के इन्कारी थे कुर्आन सुनकर आस्थावान बनने पर विवश हो गए। उसकी एक बानगी देखिए "तुम खुदा का इन्कार किस तरह करते हो, यद्यपि तुम कभी बेजान थे उसने तुमको जीवन दिया फिर एक दिन तुमको मुर्दा बना देगा, फिर जीवित करेगा और फिर उसी के पास वापस किये जाओगे" (सूरः बकरः 3)। अन्य स्थान पर है "आकाश और धरती के जन्म में, दिन–रात के आने में 'उन नावों में जो समुद्र में इन्सानों के लिए लाभकारी वस्तुओं को लेकर चलती हैं, बादलों से पानी बरसाते हैं, उस जल से मृत धरती को जीवित करने में और इस ज़मीन में हर प्रकार के प्राणी को फैलाने में, पवनों को चलाने में उन बादलों में जो आकाशीय जगत में स्थिर हैं, समझ दारों के लिए निःसन्देह बड़ा प्रमाण है"

(सूरः आले इमरान 9)।

इसी प्रकार की अनेक कुर्आनी आयतों को सुनकर अनगिनत लोग मुसलमान बने जिसमें आस्था, उपासना आचार व्यवहार आदि हर विषय का प्रभावपुर्ण चित्रण कुर्आन इस प्रकार करता था वह दिलों में घर कर जाता था। रस्मों–रिवाज और रीतियों का बंध इस सैलाब को किसी प्रकार रोक नहीं सकता था। इस पर भी जो नास्तिकता (कुफ्र)

पर अड़े रहे तो वह मात्र उनके व्यक्तिगत स्वार्थ का प्रभाव था, वास्तवक्ति का इन्कार न था।

समस्त वरिष्ट सहाबा (रज़ि0), कबीलों के सरदार, प्रसिद्ध कवि और वक्ता कुर्आन ही सुनकर मुसलमान बने। हज़रत उमर (रज़ि0) हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के कत्ल के इरादे से निकले थे किन्तु कुर्आन की आयते सुनी तो काँप उठे और इस्लाम स्वीकार कर लिया। हज़रत अबूजर (रज़ि0) ने इस्लाम लाने से पहले अपने भाई अनीस (रज़ि0) को जो अरब के कवियों में से थे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भेजा। वहाँ से कुछ सुनकर लौटे और अबूजर (रज़ि0) से कहा कि लोग उन्हें (मुहम्मद सल्ल0) को ज्योतिषि और कवि कहते हैं, यद्यपि में ज्योतिषियों और कवियों, दोनों के वाक्य वाणी से परिचित हुँ किन्तु उनकी वाणी दोनों से भिन्न है। अनीस (रज़ि0) के बाद हज़रत अबूजर (रज़ि0) स्वयं गए और वापस आए तो उनका आधा कबीला उसी समय मुसलमान हो गया। (मुस्लिम)

उस्मान बिन मज्ऊन वरिष्ट सहाबियों में से हैं जो शुरू में ही मुसलमान हो गए थे। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुर्आन की ये आयत, अनुवाद : "खुदा का न्याय उपकार का और रिश्तेदारों को अता करने का आदेश देता है, और अश्लीलता से, बुरी बात से, और अत्याचार से मना करता है, वह तुमको समझाता है कि शायद तुम समझ जाओ" (सूरः नहल 13) सुनी तो उनके दिल ने सबसे पहले इस्लाम का जलवा देखा। वह कहते हैं कि यह पहला अवसर था जब इस्लाम ने मेरे दिल में जगह बनाई।(मुस्नद इब्ने हम्बल)

तुफैल (रज़ि0) प्रसिद्ध और सम्मानित व्यक्ति थे। देश त्याग (हिज्रत) से पहले मक्का गए। लोगों को उनके आने का समाचार मिला तो उनके पास गए और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में कहा कि उनके पास न जाना, वह लोगों पर जादू कर देते हैं किन्तु जब हरम में संयोग से हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) से कुर्आन सुना तो संयम न रख सके और मुसलमान हो गए। (इनके इस्लाम लाने का हाल इब्नुलकय्यिम ने इब्ने इस्हाक के हवाले से लिखा है)। देश त्याग से पहले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब ताइफ की यात्रा की और काफिरो (इन्कारियों) को इस्लाम का निमंत्रण दिया तो यद्यपि उसका जवाब ईंट और पत्थर था किन्तु हज़रत खालिदुलउदववानी (रज़ि0) ने जो ताइफ के निवासी थे आप (सल्ल0) को सूरः तारिक़ पढ़ते सुना तो अत्यन्त प्रभावित हुए और उसी नास्तिकता (कुफ्र) की अवस्था में सूरः याद करली और अंततः इस्लाम लाए।

(मुस्नद इब्ने हम्बल)

हज़रत अबू बक्र (रज़ि0) को मक्का के समय कुछ नास्तिकों (काफिरों) ने अपने शरण में ले लिया था। उसी अवधि में उन्हें एक मस्जिद बनवाई थी और ऊँचे स्वर में उसमें नमाज पढ़ा करते थे, जिसको सुनकर मुहल्ले के नवजवान और औरतें इकट्ठा हो कर कुर्आन सुनने लगती जिससे उनका मन सम्मोहित होकर इस्लाम की ओर खिंचा चला आता था। अतः इसी आधार पर इन्कारियों (काफिरो) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि0) से शिकायत की कि आप कुर्आन को ऊँचे स्वर में न पढ़ा करें क्योंकि इससे हमारे बच्चे और औरतों में इस्लाम के प्रति आकर्षण पैदा होता है। (बुखारी)। सर्वप्रथम जब अन्सार उक्बा नामक स्थान पर इस्लाम लाए तो कुर्आन ही सुनकर मुसलमान हुए। नज्जाशी (इथोपिया) के राजा की उपाधि) के दरबार में जब हज़रत जाफर (रज़ि0) ने कुर्आन की कुछ आयतें पढ़ीं तो नज्जाशी रो कर कहने लगा कि "खुदा की कसम ये वाणी और इन्जील (बाइबिल) का एक ही स्त्रोत्र हैं।[1]

(मुस्नद इब्ने हम्बल)

❑❑

संकलनकर्ता टिप्पणी : 1– अंतः वह कुर्आन आयतों से प्रभावित होकर मुसलमान हो गया। यहाँ ये बात चिन्तन मनन करने वाली है कि एक शक्तिशाली राजा जिसे तलवार नहीं डरा सकती क्यों कुर्आनी आयतों को सुनकर मुसलमान हो गया?)।

बक़रईद की क़ुर्बानी

- इदारा

हमने हर उम्मत के लिये क़ुर्बानी करना इस ग़रज़ से मुक़र्रर किया था ताकि वह उन चोपायों पर अल्लाह का नाम लें (अर्थात क़ुर्बानी करें) जो हम ने उन को प्रदान किये हैं। (अलहज्ज : 34)

❖ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह0) के नज़दीक हर मालादार पर क़ुर्बानी वाजिब है। (खुलासतुल फतावा)

❖ जिस पर क़ुर्बानी वाजिब है अगर वह क़ुर्बानी के दिनों में जानवर की कीमत सदका कर दे तो वाजिब अदा न होगा (आलमगीरी)

❖ जो मुसलमान 612 ग्राम चान्दी का मालिक है, या इतनी चान्दी खरीदने के पैसे रखता हो चाहे वह मर्द हो या औरत उस पर क़ुर्बानी वाजिब है, औरतें इससे कहीं जियादा जेवर रखती हैं उन को क़ुर्बानी करना चाहिये।

❖ अगर कोई मुसलमान क़ुर्बानी के दिनों में घर की जरूरियात, तथा सवारी आदि के अतिरिक्त ऐसी चीज़ का मालिक है जिससे 612 ग्राम चान्दी ख़रीद सके तो उस पर भी क़ुर्बानी वाजिब है।

❖ ऐसा किसान जिस के पास 612 ग्राम चान्दी तो नहीं है लेकिन इतना गल्ला पैदा करता है जिस से घर वालों को पूरे साल की खुराक मिल जाती है तो उस पर भी क़ुर्बानी वाजिब है।

❖ जो शख़्स क़ुर्बानी के दिनों में मुसाफिर है तो चाहे मालदार हो उस पर क़ुर्बानी वाजिब नहीं है।

❖ नाबालिग़ बच्चा अगर क़ुर्बानी के दिनों में 612 ग्राम चान्दी या उस की क़ीमत का मालिक हो तो उस पर भी क़ुर्बानी वाजिब है, उस का संरक्षक उस की ओर से उस के माल से क़ुर्बानी करे।

❖ जिस पर क़ुर्बानी वाजिब है उस की आज्ञा के बिना कोई दूसरा उस की ओर से क़ुर्बानी कर दे तो वाजिब अदा न होगा, चाहे उस का लड़का ही क्यों न क़ुर्बानी कर दे।

❖ कुछ लोग अपनी वाजिब क़ुर्बानी छोड़ कर किसी और की ओर से नफ़्ली क़ुर्बानी करने लगते हैं यह ठीक नहीं है पहले अपनी वाजिब क़ुर्बानी करें फिर नफ़्ल क़ुर्बानी करें।

❖ क़ुर्बानी ऊँट, ऊँटनी, गाय, बैल, भैंस, भैसा, पड़वा, बकरा, बकरी, भेड़, भेड़ी दुँबा की होती है इन के अलावा जानवरों की क़ुर्बानी नहीं होती, हमारे देश में गाय की क़ुर्बानी करने में बड़ी समस्याएं खड़ी हो जाती हैं, अतः यहाँ गाय की क़ुर्बानी न करें क़ुर्बानी के लिये ऊँट, ऊँटनी की उम्र 5 साल, भैस, भैसे की 2 साल और भेड़ बकरे की उम्र एक साल होना ज़रूरी है।

❖ क़ुर्बानी का जानवर स्वस्थ हो निर्दोष हो, यदि कोई दोष हो तो किसी आलिम से समझे बिना क़ुर्बानी न करें।

❖ क़ुर्बानी का वक़्त बक़रईद की नमाज़ के पश्चात 12 ज़िल्हिज्जा को सूरज डूबने से पहले तक है।

❖ मुस्तहब है कि क़ुर्बानी का गोश्त एक तिहाई गरीबों को दें एक तिहाई अज़ीज़ों में बाँटे, एक तिहाई घर के लोग खाएं, लेकिन यदि सारा गोश्त घर के लोग खा डालें तब भी कोई गुनाह नहीं है।

❖ गोश्त बनाने काटने के बदले में कसाई को खाल देना जाइज नहीं उससे मेहनताना ठहरा कर अदा करें।

❖ खाल न बिके तो घर के काम में आ सकती है जैसे झोला बनालें, मुसल्ला बना लें लेकिन बिके गी तो कीमत सदक़ा होगी।

❖ कुछ जगहों पर रिवाज है कि बड़े जानवर में सिर्फ़ 6 लोग शरीक होते है और सातवा नाम हुजूर का कर देते है हुजूर (स0) वाले हिस्से की पूरी क़ीमत अगर एक आदमी अदा करे तो ठीक है लेकिन अगर हुजूर के हिस्से में छः लोग शरीक होगे तो किसी की भी क़ुर्बानी सहीह न होगी बरेली, देव बन्द, दोनों जगह का यही फ़त्वा है।

शेष पृष्ठ 14

किरत सात

ख़वातीने इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

- अनु0 : हबीबुल्लाह आज़मी

- मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी

इस्लाम के आदेश की पाबन्दी

यह वह घटनाएं है जिनमें खवातीन (औरतों) को इस्लाम लाने पर कठिन से कठिन कष्ट उठाना पड़ा। मगर उनके पाँव नहीं डगमगाए। अब कुछ इस प्रकार की घटनाएं बयान की जाती हैं जिन में दिखाया जाएगा कि खवातीने इस्लाम ने अपने पवित्र धर्म के आदेशों की पाबन्दी में कैसी दृढ़ता का सबूत दिया है और उनके मुकाबले में अपने स्वाभाविक भावनाओं, सुख सुविधाओं को किस प्रकार से त्याग किया।

शरीअ़त में हुक्म है कि किसी की मौत पर विलाप न करें, कपड़े न फाड़े जाएं, शरीर न नोचा जाए रोने पीटने के बजाए सब्र से काम लेना चाहिये। ईरान में इनका व्यापक रुप से प्रचलन था। यहाँ तक कि सरदार और कबीलों के मुख्या अपनी मौत पर रोने पीटने के लिए खास तौर से वसीयत करते थे। हमारे भारत में इस आदेश पर चलने वालों की अधिकता है हालाँकि इस्लाम इसकी सख्ती से मनाही करता है। उम्मे सलमा (रज़ि0) एक बहुत बड़ी सहाबिया थीं। उनके शौहर का नाम उबूतलहा था। एक बार उनका छोटा सा बेटा अबू उमैर बीमार हुआ। इत्तिफाक से अबूतलहा एक रोज किसी काम से घर के बाहर गये। उसी बीच अबू उमैर का देहान्त हो गया। उनकी माँ धार्मिक आदेशों की बहुत पावन्द और धार्मिक नियमों के पालन में बहुत सख्त थी। तुरन्त उनकी लाश को एक स्थान पर छुपा दिया। जब अबूतलहा घर वापस आए पूछा अबू उमैर कैसा है? उम्मे सलमा (रज़ि0) ने बहुत इतमिनान से जवाब दिया कि बहुत ही इतमिनान। थोड़ी देर ठहर कर कहा कि पड़ोस में एक शख्स ने मुझ से एक चीज माँग ली थी अब मैं उससे माँगती हूँ तो नाराज होता है। उन्होंने कहा पड़ोसी की यह बात न्याय व इनसाफ के बिल्कुल खिलाफ है।

अब उम्मे सलमा ने इस भेद को खोला और अबू उमैर के देहान्त की सूचना दी। फिर इस प्रकार संतावना दी कि देखो यह एक खुदा की अमानत थी जो हमारे सुपुर्द थी। जब उसकी तरफ से प्यामे अजल (मौत का संदेश) आया तो हमें बिना संकोच यह अमानत सपुर्द कर देनी चाहिये। अब अगर तुम रोना पीटना शुरु करोगे तो उसी पड़ोसी की तरह यह कर्म इंसाफ से हट जाएगा। मैं ने तुम से कहा था कि बिल्कुल सुकून (शान्त) हो गया इससे मुझ पर झूठ का आरोप न लगाना कि इन्सान के लिए मौत से अधिक वह और कौन सी घड़ी शान्ति और इतमिनान की होगी।

अबू तलहा (रज़ि0) ने यह किस्सा रसूल (सल्ल0) के दरबार में सुनाया। हुजूर (सल्ल0) ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की। इस घटना से खासतौर पर महिलाओं को नतीजा निकालना चाहिये। इन के लिए इस में नसीहत का खजाना है। और फिर उन्हें भारत में मौत पर रोने पीटने की रस्म व रिवाज का उन्मूलन जोरशोर से करना चाहिये। उम्मे सलमा (रज़ि0) की और बहुत सी शिक्षाप्रद घटनाएं हैं जिस का वर्णन इंशा अल्लाह बिभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत आएगा।

एक बार हुजूर (सल्ल0) ने फरमाया अनुवाद : किसी मुसलमान औरत के लिए यह जाएज नहीं है कि वह किसी मुर्दे पर तीन दिन से अधिक शोक मनाए शौहर से सम्बन्धित छूट है कि उनका शोक चार महीने तक मनाया जाए।

इस युग में इस तरह की बातों का कौन ध्यान रखता है। लोग कारण

बताते हैं कि सगे सम्बन्धियों पर कैसे हो सकता है कि वर्षों नहीं, महीनों तक भी उनका शोक न मनाया जाए। रंगे कपड़े न उपयोग किये जाएं। बहर हाल इस्लामी कानून इसकी अनुमति नहीं देता।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे हबिबा (रज़ि0) के पिता हज़रत अबू सुफयान (रज़ि0) का जब देहान्त हुआ तो उन्होंने तीसरे ही दिन रंग मंगा कर प्रयोग किया और फरमाया कि अगर मैंने हुजूर (सल्ल0) की जबान से यह आदेश न सुना होता तो मुझे ऐसा करने की कोई आवश्यक्ता न थी। देखो उम्मुल मोमिनीन (रज़ि0) के पिता का देहान्त हो गया, हिन्दुस्तान के रस्मोरिवाज के अनुसार कम से कम साल भर तक इस प्रकार की प्रसन्ता का प्रदर्शन न करना चाहिये था लेकिन केवल इस ख्याल से कि हुजूर (सल्ल0) का फरमान है उन्होंने तीसरे ही दिन अपने पिता का सोग समाप्त कर दिया।

मआज अदविया एक बार बीमार हुईं लोगो ने नबीजुल बहर (एक दवा का नाम) इलाज में तजवीज किया, दवा लाई गई। उन्होंने इस का प्याला अपने सामने रख कर कहा कि खुदावन्द। अगर आयशा सिद्दीका (रज़ि0) मुझ से इस की ममानियत (मना करना) की हदीस मुझ से न बयान की होती तो मैं इसका प्रयोग करती। यह कह कर दवा का प्याला ढुलका दिया और खुदा के फज्लो करम (इश्वर की दया) से अच्छी हो गई।

दवा के लिए यद्यिप नाजाएज चीजों का उपयोग शरीअ़त ने जाएज रखा है लेकिन यह उस सूरत में है जब इसके सिवा कोई दूसरी दवा मौजूद न हो।

एक बार उमर बिन खत्ताब (रज़ि0) का गुजर एक जुजाम (कोढ़) से पीडित औरत पर हुआ आप ने उसे सार्वजनिक स्थान पर बैठने से मना किया ताकि आम राहगीरों को तकलीफ न हो। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि0) के देहान्त के बाद एक आदमी उस के पास गया और कहा कि तुम्हारे मना करने वाले का देहान्त हो गया उसने उत्तर दिया। यह कैसे हो सकता है कि मैं ने ज़िन्दगी में तो उसकी आज्ञा का पालन किया और अब देहान्त के बाद उसकी आज्ञा का उल्लघन करूं।

देखों इस बुद्धिमान औरत ने किस प्रकार द्वेष (नेफाक) को दूर किया कि आज्ञा पालन का असली अर्थ यही है कि बाहर और मन के अन्दर, खुले छुपे हर हालत में अनुकरण (मुताबअत) सामने रहे। इन चन्द मिसालों से साफ हो गया कि धार्मिक आदेशों की पाबन्दी में औरतों ने किस दर्जे दृढ़ता दिखाई।

मुस्लिम औरतों का त्याग

जिस तरह वह तमाम अच्छाइयाँ जो इस्लाम प्रथम युग के पवित्र लोगों में मौजूद थीं। औरतें भी उन अच्छाइयों में उनके बराबर थीं इसी तरह इस गुण में भी उनका पग कहीं पीछे नहीं हटा। यह गुण उस युग की विशेषताओं में से है। कुरआन मजीद में इस तरफ संकेत है। अनुवाद : वह लोग त्याग करते हैं चाहे उन्हें किसी प्रकार का कष्ट ही क्यों न हो।

इस राह में औरतों ने बाज वह कठिन मंजिले तै की हैं कि जिस की मिसाल मर्दों में भी मुश्किल से मिल सकती हैं। औलाद की मुहब्बत के लिए औरतें मशहूर हैं लेकिन इस्लाम के प्रसार प्रचार और अपने सच्चे मजहब की खातिर उन्होंने अपनी औलाद को उदार हृदय के साथ कुर्बान कर दिया है।

उम्मे सुलैम (रज़ि0) बहुत गरीब थीं। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिज्रत (देश त्याग) फरमाकर मदीना तशरीफ लाए हैं तो हर व्यक्ति ने अपनी हैसियत के अनुसार तोहफे पेश किये कि यह उनके लिए सबसे बड़ी खुशी का दिन था क्यों कि दुनिया की सबसे बरतर और बेहतर नेअमत (प्रसाद) आज उन की धरती पर जाहिर हुई थी। और रिसालत का सूर्य मदीना की घाटियों में उदय हुआ था। यही वह मुबारक दिन है जब कि उल्लास और खुशी से तमाम मदीना हुजूर (सल्ल0) के स्वागत के लिए उमड आया था। लड़कियाँ झूम–झूक कर ये पढ़ती थीं। अनुवाद : सनीयः वदाअ से

चौदहवीं का चाँद उदय हुआ है जिस का शुक्रिया हम सब पर वाजिब (आवश्यक) है।

बहर हाल उम्मे सुलैम (रज़ि0) भी कोई तोहफा पेश करना चाहती थीं लेकिन गरीबी के कारण मजबूर थीं। आखिर कार अपने कमसिन बच्चे अनस को लाकर हुजूर (सल्ल0) को सुपुर्द कर दिया कि इस को नज़र (भेंट) करती हूँ। सेवा में रखिये और इसके लिए लम्बी उम्र और अधिक माल की दुआ फरमाइये। हुजूर (सल्ल0) ने आपका यह तोहफा दिल से स्वीकार किया और हज़रत अनस (रज़ि0) के लिए दुआ फरमाई। यह हज़रत अनस (रज़ि0) वही है जिन्होंने दस वर्ष तक हुजूर (सल्ल0) की सेवा की 103 वर्ष तक जिन्दा रहे और हज़रत उमर (रज़ि0) की खिलाफत के युग में बसरा की हुकूमत पर पदासीन (फाएज) रहे। क्या मजहब के लिए इससे भी अधिक किसी त्याग की आवश्यक्ता है कि गरीब औरत अपने जिगर के टुकड़े को हमेशा के लिए इस्लाम के लिए भेट कर दें।

उहद की जंग विभिन्न हैसियतों से मुसलमानों के लिए एक बड़ी आजमाईश थी। मुसलमानों के मशहूर सरदार और अरब के नामी पहलवान हज़रत हमजा (रज़ि0) इस जंग में शहीद हुए। हिन्द बिन्ते उतबः के गुलाम वहशी ने उन्हें नेजा मार कर शहीद किया और फिर उसी ने जंगे यमामः में मुसैलिमा कजाब को तलवार से कत्ल किया। उसका यह वाक्या बहुत मशहूर है कि उहद में एक ऐसे शख्स को मारा जो सबसे बेहतर था और यमामः की लड़ाई में उसको कत्ल किया जो सबसे बदतरीन था।

हिन्द बिन्ते उतबः ने शहीदों के सरदार हज़रत हमजा को शहीद करा के मुस्लः किया अर्थात कलेजा निकाल कर चबाया और विभिन्न अंगों को शरीर से अलग कर दिया। ऐसा शोक पूर्ण और दुखदाई दृश्य था कि इन्सान देखते ही बेचैन हो जाता। इस लिए आप (सल्ल0) ने मना फरमाया कि हज़रत सफीया (आप की फूफी) लाश को न देखने पाएं अन्यथा उन से बर्दाश्त करना कठिन होगा। जब हज़रत सफीया (रज़ि0) को खबर हुई वह अपने भाई की लाश देखने आईं तो उनके बेटे जुबैर (रज़ि0) ने (रसूलुल्लाह के सहयोगी) नबी का कथन सुनाया लेकिन हज़रत सफीया (रज़ि0) ने फरमाया कि मुझे मालूम है कि मेरे भाई हमजा (रज़ि0) का मुस्लः किया गया है। मुझे क्यों रोकते हो हालाँकि किसी शख्स का खुदा की राह में इस प्रकार कुर्बान होना एक साधारण बात है। इस ज़माने की औरतें होती तो रोने पीटने चीखने से आसमान न छलनी कर देतीं? लेकिन इस शेर दिल औरत के पेशानी (ललाट) पर बल तक न आया। इस्लाम की शान यही है कि खुदा की राह में जो मुसीबत और कष्ट दिया जाये उससे खुशी–खुशी बर्दाश्त किया जाए।

एक अंसारिया (रज़ि0) के तमाम सगे सम्बन्धी एक जंग में शहीद कर डाले गये। लोगों ने उन्हें खबर पहुँचाई लेकिन उन का पहला प्रश्न यह हुआ कि हुजूर (सल्ल0) खैरियत से हैं? लोगों ने आप (सल्ल0) की सलामती की खुश खबरी सुनाई तो खुशी से फूली न समाईं और कहा कि जब नबी अकरम (सल्ल0) खैरियत से हैं तो ऐसी हजार जाने उन पर कुर्बान की जा सकती हैं। इस तरह जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) जंगे उहद से सही सलामत मदीना तशरीफ लाए, क्योंकि जंग के दर्मियान हुजूर (सल्ल0) को कई जख्म लगे थे तो साद बिन मआज (रज़ि0) सरदारे अंसार की माता कबशा (रज़ि0) बिन्ते राफअ दौड़ती हुई आईं और कदमों पर गिर पड़ी। फिर हुजूर (सल्ल0) से कहा आपकी सलामती के आगे सब चीज कमतर है। उम्मे सुलैम (रज़ि0) ने अपने शौहर का महर केवल इसलिए माफ कर दिया था कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार लिया था।

इन घटनाओं में हज़रत अस्मां बिन्ते अबू बकर (रज़ि0) की घटना बड़ी दिलचस्प है। जब हुजूर (सल्ल0) ने हिज्रत (देश त्याग) का इरादा किया तो हज़रत अबू बकर (रज़ि0) के यहाँ आप (सल्ल0)

के लिए नाश्ता तैयार किया गया। जल्दी में नाश्ता बान्धने की कोई चीज न मिली तो हज़रत अस्मां (रज़ि0) ने तुरंत अपने कमर बन्द के दो टुकड़े कर दिये एक से नाश्ता बान्धा और दूसरे से खुद बान्धा। इस तारीख से उनका लकब (उपाधि) "जुन्नातकैन" हो गया। यह महिला बड़ी बहादुर और जवाँमर्द थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि0) उन्हीं के पेट से पैदा हुए थे। इन सबसे बढ़ कर बहुत बड़ा त्याग है जो उम्महातुल मोमिनीन और हुजूर (सल्ल0) की पवित्र बीवियों ने किया। हुजूर (सल्ल0) की बाज पवित्र बीवियों ने आप (सल्ल0) से कुछ फरमाईश (माँग) की थीं। इस बारे में दो आयतें उतरीं।

अनुवाद : (ऐ नबी (सल्ल0) तुम अपनी बीवियों से कह दो अगर वह साँसारिक जीवन और फानी (विनाशवादी) माल व दौलत की इच्छा रखती हैं तो आओ मैं तुम्हें दूँ और फिर छोड़ दूँ लेकिन अगर तुम खुदा और उस के रसूल और आखिरत (परलोक) की इच्छा रखती हो तो याद रखो कि खुदा के दरबार में उस के लिए सवाबे अजीम है।

यही परीक्षा एक बहुत ही कठिन अवसर था जब यह आयतें उतरीं तो पहले आप (सल्ल0) हज़रत आयशा के पास तशरीफ ले गये और फरमाया कि मैं तुम से एक बात कहना चाहता हूँ। इस के जवाब में कोई जल्द बाजी की जरुरत नहीं है। माँ बाप से परामर्श करने के बाद जवाब देना। इस के बाद आप (सल्ल0) ने घटना को विस्तार से बताया। हज़रत आयशा (रज़ि0) ने फरमाया इन मामिलों में माँ बाप से परामर्श करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। मैंने खुदा और रसूल को इख्तियार किया। इस प्रकार हुजूर (सल्ल0) और पवित्र बीवियों के पास तशरीफ ले गये और उन से हज़रत आयशा (रजि0) की बात को बयान फरमाया। सबने अपनी सहमति जताई। इस घटना के बाद क्या हम दावा नहीं कर सकते कि औरतों ने भी इस्लाम के इतिहास में अपने त्याग के बेमिसाल नमूने यादगार छोड़े हैं? यह तो रसूल (सल्ल0) की पवित्र बीवियों का हाल था, आम औरतें भी हर–हर कदम पर इस का लिहाज रखती थीं। चुनाँचि सईद असदीयः (रज़ि0) ने एक बार हुजूर (सल्ल0) की सेवा में किसी बीमारी की शिकायत की और स्वस्थ होने के लिये दुआ की गुजारिश की। आप (सल्ल0) ने फरमाया अगर कहो तो मैं तुम्हारे लिए दुआ करूं और तुम अच्छी हो जाओ लेकिन सब्र से काम लो तो खुदा तुम्हें अज्रे अजीम (महान पुरस्कार) देगा उन्होंने तुरंत कहा कि मैं अल्लाह के पुरस्कार को स्वीकार करती हूँ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की एक फूफी का नाम उरवया था। उनके बेटे का नाम तय्यब था। वह इस्लाम लाए तो अबू जेहल और दूसरे कुरैश सरदारों ने उनको खम्बे में बान्ध बान्ध कर मारा। लोगों ने उनकी माँ से आकर कहा कि अगर वह मुहम्मद (सल्ल0) का समर्थन न करते तो ऐसा न होता लेकिन उन्होनें कभी इन शिकायतों पर ध्यान न दिया बल्कि गर्व से कहा करतीं कि उसका सबसे अच्छा दिन वही है जबकि वह अपने मामूजाद भाई का समर्थन करता है।

इन तमाम रिवायतों (वर्णनों) पर नज़र डालो और गौर करो कि क्या यह दावा सही नहीं है कि औरतें इस गुण में न केवल मर्दों के बराबर है बल्कि कहीं–कहीं वह उनसे आगे हैं?

इस ज़माने की औरतों को इस पर गौर करना चाहिये जिस प्रकार उनके पूर्वजों ने दीन की सेवा और मजहबी सम्मान में इस प्रकार त्याग से काम लिया उसी प्रकार अपनी कौम की उन्नति और डूबती हुई नाव को उछालने में अपनी दिमागों और जिस्मानी कुव्वत ऐसे ही जोश व खरोश से लगाना चाहिये और कौमी सेवा में अपने माल व दौलत का एक बड़ा भाग खर्च करके यह साबित करना चाहिये कि अब भी हम में वही दीनी सरगर्मी और कौमी समर्थन में वही जोश मौजूद है।

❑❑

सैलानी की डायरी

– एम0 हसन अंसारी

11 अगस्त 2010 आज 29 शाबान है, कल रमाजन के मुबारक महीने की पहली तारीख और पहला रोजा, ऐसा समझा जाता है। रमजान के महीने, जिसे इस्लामी महीनों का सरताज कहा गया है की आमद आमद है। स्वागत की तैयारियाँ, मस्जिदों की साफ सफाई का विशेष ध्यान, अब यह मस्जिदें महीने भर खूब भरी रहेंगी। इस्लामी दुनिया में नेकी बटोरने, हमदर्दी जताने, गमख्वार बनने, नमाजों की कसरत, तिलावत (कुरआन का पाठ) के सिलसिले की बहार का आगमन, माहौल को साफ सुथरा बना देते हैं।

अस्र की नमाज हो चुकी है दो मुस्लिम नवजवान मोटर साइकिल पर मस्जिद के बाहर आकर रूकते हैं, एक बाहर ही रहता है, दूसरा लपक कर अन्दर पहुँचा जिस के हाथ में कोई एक दर्जन पाकेट कैलेंडर है, अब इसे कौन संभाले? वह ताक पर रखकर बाहर जाने को हुआ कि सैलानी के मुँह से सहज ही निकल पड़ा 'नमाज पढ़ ली? नवजान बोला, अभी कई मस्जिदों में इन्हें पहुंचाना है, नेताजी का आदेश है, पहले यह काम करलें यह ज्यादा जरूरी है, नमाज बाद में पढ़ लेंगे। यह देहात का हाल है। शहरों में हालात इस से बेहतर होंगे। पर हिन्दुस्तान तो देहात में बसता है।

शाबान में कैलेंडरों की बाढ़ आ जाती है। हमारे मदरसे कैंलेन्डरों की छपाई पर खासी रकम खर्च करते हैं। मस्जिद में कौन कैलेंडर कहाँ लगे इस पर तकरार होती है, टीका टिप्पणी होती है और टाईम चार्ट में एक दो मिनट का फर्क हुआ तो नौबत टकराव की पैदा होती है। एक मदरसे के कैलेंडर में अलविदा (रमजान का अन्तिम शुक्रवार) रविवार को दर्ज हो गया, जब इस की ओर मदरसे वाले एक सफीर का ध्यान आकृष्ट किया गया तो वह जनाब नाराज हो गये। इफ्तार कैलेंडर के जरिये मस्जिदों में ओछी सियासत की जाने लगी है। एक पाकेट कैलेंडर में ऊपर की तरफ पवित्र काबा की तस्वीर, अन्दर दुआयें और चार्ट, उलटने पर नीचे की तरफ सियासी पार्टी का निशान और उम्मीदवार का नाम व पता। यह वह राहें हैं जिन से होकर ओछी सियासत हमारी मस्जिदों में अपना ठौर बना रही है। यह वस्तुस्थिति इस्लामी शिक्षा तथा रोजा व रमजान की सही मंशा के विपरीत है। मदरसे जो पैसा इन कैलेंडरो की छपाई पर खर्च करते हैं यदि इसे मदरसे की बुनियादी सहूलतों, जिनके लिये हम दूसरों का मुँह तकते हैं, पर खर्च किया जाए तो क्यों यह बेहतर न होगा? यह एक विचार है जो सैलानी के मन में आया।

मस्जिदों में रमजान के महीने में जो कैलेंडर लगाये जाते हैं उन का मकसद रोजेदारों का इफ्तार व सहरी का समय बताना, दुआ व नीयत बताना और मदरसे का परिचय कराना होता है। किन्तु यह सब व्यवहार में लायें ऐसा नहीं होता, रमजान के महीने में अजान प्रायः एक निर्धारित आदमी (मुअज्ज़िन) देता है और प्रायः मस्जिदों में दायमी जन्त्री लगी होती है मदरसे के लिये चन्दा तो लोगों से मिलने पर ही मिलता है जिस में इन कैलेन्डरों का रोल नहीं के बराबर होता है। किसी काम में जितना पैसा लगाया जाये उसका रिटर्न उससे ज्यादा होना चाहिये, यह बात हर कोई समझता है, फिर हमारे मदरसे इन कैलेंडरों पर हजारों क्यों खर्च करते हैं, यह एक सवाल है?

12 अगस्त 2010 आज पहला रोजा है। चाँद दिखने का ऐलान रात कुछ देर से हुआ। लोकल विजिबिल्टी ऑफ मून (स्थानीय चन्द्र दर्शन) पर कुछ लोग अड़े रहे, न तरावीह पढ़ी न रोजा रखा, इस लिये कि उन्होंने या उनके आदमियों ने चाँद नहीं देखा। 'लोकल' शब्द कब जुड़ा, किसने जोड़ा, क्यों जोड़ा

गया यह कुछ एसे सवाल हैं जिनका जवाब जानने की जरूरत है। लोकल ट्रेन और हमारे बड़े शहरों में बीसियों किलो मीटर दूर ले जाकर हमको छोड़ती है और ले आती है, लोकल डाक मुम्बई, कोलकाता जैसे शहरों में चालीस कि0मी0 दूर तक बटती है, इस लोकल को हम मानते है, और इससे फायदा उठाते हैं, लेकिन किसी शहर से बाहर इतनी ही दूर पर देहात में बसे लोग चाँद के मामले में अड़ जाते हैं कि यहाँ तो चाँद दिखा नहीं। फलतः एक तरावीह, एक रोजा ऐसे लोगों का छूट जाता है, क्या इस में घाटा नहीं है? दो ईदें होती हैं, एक ही गाँव और बस्ती के कुछ लोग ईद मना रहे होते है, कुछ लोग नहीं मना रहे होते इस लिये कि उन्होंने अथवा उनके आदमियों ने चाँद नहीं देखा और नही उनके रहनुमा की तरफ से ऐलान हुआ। इस वस्तुस्थिति से इस्लाम की साफ सुथरी, सही सोच, सीधी राह, अखूवत व भाईचारा वाली तस्वीर कुप्रभावित होती है। और हमारे ऊपर इस का असर नहीं पड़ता, यह चिन्ता की बात है। साइंस ने तरक्की की, लोगों की जानकारी बढ़ी, ज्ञान का क्षितिज बहुत विशाल हो गया, ज़मीन और चाँद से आगे निकलकर इन्सान ने कमन्दें डाल दीं। हमारे लिये लोकल विजिबिल्टी ऑफ मून, विजिबिल्टी ऑफ मून की समस्या जस की तस बनी हुई है। हमारी इस्लाह कब होगी? कैसे होगी? कौन करेगा? यह कुछ सवाल थे जो सैलानी को परेशान करते रहे। और यह भी कि ईद के दिन रोजा रखना मना है, पर क्या 30 शाबान को रोजा नहीं रखा जा सकता? हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो शाबान में कसरत से रोजा रखते थे। रोजा फर्ज व नफिल दोनों होता है।

हमारे देहात शहरों की अपेक्षा ज्यादा इस्लाह के पात्र हैं खास कर दीनी ऐतबार से। इल्म होते हुए कम लोग भटकते हैं, इल्म न होने पर ज्यादा।

❑❑

हज मुबारक

मुबारक हो हाजी सफर हज पे जाना
ये लब्बैक लब्बैक सदा का लगाना
खुदा घर का फेरा दुआओं का करना
सई कर के उम्रे को यूँ पूरा करना
हुइ आठवीं जब तो इहराम में फिर
मुबारक हो हाजी मिना को ये जाना
नवीं को है अरफात हज का अहम रुक्न
दुआओं में सारा वहाँ दिन बिताना

मुजदलफा में आकर नवाफिल का पढ़ना
शबे क़द्र जैसी वहाँ रात पाना
उजाला हुआ तो वकूफ वाँ पे करना
मिना आ के वापस रमी वाँ पे करना
मुबारक हो सारे मनासिक का करना
ये मनहर का जाना वहाँ नहर करना
खुदा के लिये फिर सर अपना मुडाँना

नहा धो के कि वाँ पे कपड़े बदलना
हरम को तवाफे जियारत को जाना
तवाफो सई कर मिना वापस आना
रमीं 11, 12 की वाजिब समझना
तवाफे विदा बिन न मक्के से आना
खुदाया ये हाजी तेरा हो के आए
तेरी नेमतों पर तेरे गुन ये गाये

रौज-ए-मुबारक और मस्जिदे नबवी के अहम मक़ामात का तआरुफ

– मुहम्मद सलमान नकवी नदवी

1. सन् 87 हिजरी तक मस्जिदे नबवी के मशरिकी जानिब अज्वाजे मुतहरात के हुज़रात मौजूद थे और हुज़ूर (सल्ल0) की कब्र मुबारक मस्जिद के बाहर हज़रत आईशा सिद्दीका (रज़ि0) के हुजरे में थी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज (रह0) ने सन् 87 हिजरी में सारे हुजरात खरीद कर मस्जिद में शामिल कर लेने का फैसला किया क्योंकि उस वक्त तक सारी अज्वाजे मुतहरात फौत हो चुकी थीं और मस्जिद में जगह की सख्त किल्लत थी।

मस्जिद के तौसी के वक्त हज़रत आईशा सिद्दीका (रज़ि0) के हुजरे को छोड़ कर सारे हुजरे मस्जिद में शामिल कर लिए गये। उस वक्त हज़रत आईशा (रज़ि0) के हुजरे की दीवारें कच्ची और छत लकड़ी की थी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज (रह0) ने हुजरे के अतराफ बगैर खिड़की, दरवाजे की ऊँची मजबूत दीवार तअमीर कर दी। हुजरा चौकोर था मगर बाहरी दीवारें पाँच कोनों की बनाई गई ताकि इस की मुमासिलत काबा शरीफ से न हो। अगले छः सौ साल तक मस्जिद की छत और हुजरे की ऊपर की छत एक ही थी कोई गुंबद न था, सिर्फ निशान के तौर पर रौजा मुबारक के ऊपर मस्जिद की छत को थोड़ा ऊँचा कर दिया गया था ताकि कोई गलती से रौजा मुबारक के ऊपर वाली छत पर न चला जाए।

2. सन् 668 हि0 में पहली बार सुल्तान रूक्नउद्दीन बेबरस ने हुजरा के अतराफ पाँच कोनों वाले कमरा के अतराफ लकड़ी की जाली लगवाई थी जो कि दस से बारह फिट ऊँची थी। सन् 694 हि0 में शाह जैदउद्दीन कुतुबग़ा ने इस जाली को ऊँचा कर के मस्जिद की छत तक कर दिया। फिर सन् 886 हि0 में सुल्तान कातिबाई ने इन जालियों को लोहे और पीतल से बदल दिया। अब किब्ला की तरफ की जाली पीतल की है और बाकी तीनों तरफ लोहे की जालियाँ हैं जिन पर सब्ज रंग चढ़ा हुआ हैं

इन जालियों में चार दरवाजे हैं। एक किब्ला की तरफ बाबे–उलतौबा, दूसरा मगरिब की तरफ बाबे उल्वफूद, तीसरा मश्रिक की तरफ बाबे–फात्मा और चौथा शुमाल की तरफ बाबे–उल्तहजूद। इन दरवाजों से दाखिल हो कर भी पाँच कोनों वाले अहाते के बाहर तक ही पहुँचा जा सकता है। रौजा–ए–मुबारक को देखना या उस तक़ पहुँचना किसी के लिए भी मुम्किन नहीं है।

3. सन् 878 हि0 में सुल्तान कातिबाई के दौर में दीवारें कमजोर हो जाने की वजह से इन की फिर तअमीर की गई। चूँकि ईसाई और यहूदी तरह–तरह की साजिशें किया करते थे। इस लिए सुल्तान ने हुजरे की दीवारों को भी मजबूत पत्थर का बना दिया। सीधी छत चूँकि कमजोर होती है और बार–बार मरम्मत करनी पड़ती है और मरम्मत के वक्त मजदूरों को रौजा–ए–मुबारक के ऊपर छत पर भी काम करना पड़ता है जो एहतेराम के खिलाफ है। इस लिए सुल्तान ने छत को भी मजबूत गुँबद की तरह बनाने का हुक्म दिया। इन दीवारों और गुँबद में कोई खिड़की या दरवाजा नहीं है। सिर्फ ऊपर के हिस्से में एक छोटा सा सुराख है जिस से रौजा मुबारक आसानी से नज़र आता है।

सन् 878 हि0 में दीवारों की तजदीद के वक्त अल्लामा समहूदी को हुजूर (सल्ल0) की कब्र मुबारक की जियारत का शर्फ हासिल हुआ। वह लिखते हैं कि तीनों कब्रें कच्ची हैं, ज़मीन के बराबर हैं या सिर्फ

थोड़ी से उभरी हुई हैं। कुबूर के अतराफ कोई पत्थर या ईंट वगैरह लगी हुई नहीं है। दीवारों और गुँबद की तअमीर के बाद फिर किसी को यह सआदत हासिल नहीं हुई क्योंकि यह इमारत आज भी वैसी ही है।

4. रौजा शरीफ के ऊपर मस्जिद की छत पर पहली बार गुँबद, शाह मंसूर कलाउन सालेही ने सातवीं सदी के आखिर में बनवाया था। ये लकड़ी का था और ऊपर से सीसा, आदि के पतरे चढ़े हुए थे। सीसा चूँकि सिलेटी होता है इस लिए गुँबद का रंग भी सिलेटी था। सन् 887 हि0 में मस्जिद में आग लग गई थी जिस से इस गुँबद को नुक्सान पहुँचा इस लिए सुल्तान कातिबाई ने इसे दोबारा मजबूत ईंटों और पत्थरों से तअ्मीर करवाया। अगले साढ़े तीन सौ साल तक यह गुँबद इसी तरह रहा। उस वक्त गुँबद सफेद या सिलेटी रंग में रंगा जाता था।

5. सन् 1162 ई0 में दो ईसाइयों ने सुरंग लगा कर हुजूर (सल्ल0) के रौज–ए–मुबारक तक पहुंचने की कोशिश की थी। नूरूद्दीन जंगी ने उन्हें पकड़ कर कत्ल किया और रौज–ए–मुबारक के चारों तरफ पानी की सतह तकं मजबूत सीसा और पत्थर की दीवार बना दी, जो आज तक मौजूद है।

सन् 1234 हि0 में सुल्तान मुहम्मद उस्मानी ने इसे फिर से तअ्मीर करवाया, और हरे रंग से रंगा। यानी गुँबद में एक छोटा सा सुराख है, जो कि नीचे बने हुजरा के गुँबद के ठीक ऊपर है। यह सुराख की रौशनी रौज–ए–मुबारक पर पड़ती है। बारिश के दिनों में बारिश का पानी भी रौज–ए–मुबारक पर टपकता है।

6. हुजूर (सल्ल0) के रौज–ए–मुबारक और मस्जिद का नक्शा जुबानी बयान किया जाए तो वह इस तरह है। कि आप (सल्ल0) की कब्र मुबारक कच्ची है। कब्र ज़मीन से कुछ ही ऊँची है। उस के बाहर पत्थर का बना हुआ चौकोर कमरा है। जिस पर एक छोटा गुँबद हैं उस के बाहर पाँच कोनों की दीवार का अहाता है। जो मजबूत है और पत्थरों से बना है। पहले इस पर गिलाफ चढ़ाया जाता था जो आज भी उस पर पड़ा हुआ है। हम और आप इसी जाली के सामने जाकर अपना दुरूद व सलाम पेश करते हैं। इन सारी इमारतों को घेरे हुए मस्जिद की इमारत है और मस्जिद की छत पर ठीक रौज– ए–मुबारक के ऊपर हरा गंबद हैं। रौज–ए–मुबारक के अतराफ के कमरे और दीवारों में कोई खिड़की या दरवाजा नहीं है। ऊपर के दोनों गुंबदों में सिर्फ एक छोटा सुराख है। जो कि एक सीध में है। रौज– ए–मुबारक से आसमान नज़र आता है। इस सुराख से सूरज की रौशनी कब्र मुबारक पर पड़ती है।

रियाजुल्जन्नत, मिम्बर और सुतून का बयान

1. रियाजुल्जन्नत

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्ल0) ने फरमाया, "मेरे घर और मिम्बर के दरम्यान जो जगह है वह जन्नत के बागीचों में से एक बागीचा है और मेरा मिम्बर कयामत के दिन हौज (कौसर) पर होगा। (बुखारी शरीफ)

पहले रियाजुल्जन्नत की लंबाई और चौड़ाई 15x26.5 मीटर थी। मगर अब चूँकि कुछ हिस्सा जालियों के अंदर चला गया है इस लिए ये अब 15x22 मीटर बचा है।

2. मिम्बर शरीफ

शुरू–शुरू में हुजूर (सल्ल0) ज़मीन पर खड़े होकर एक खजूर के पेड़ के तने का सहारा लेकर खुत्बा दिया करते थे। मगर चूँकि देर तक खड़ा रहना तकलीफदेह था इस लिए सहाबा–ए–किराम (रज़ि0) ने तीन सीढ़ियों का एक मिम्बर बना दिया। आप (सल्ल0) तीसरी सीढ़ी पर बैठते और दूसरी सीढ़ी पर पाँव रख कर खुत्बा दिया करते थे।

ये मिम्बर लकड़ी का था जब बोसीदा हो गया तो हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि0) ने इसे नौ सीढ़ियो वाला बना दिया। उस के बाद ये

कई बार बदला गया। अब जो मिम्बर मस्जिदे नबवी में है वह सन् 998 हि0 में सुल्तान मुराद सुव्वम उस्मानी का भेजा हुआ है और बारह सीढ़ियों का है। सऊदी हुकूमत ने इस पर सोने की पालिश वगैरह कर के और खूबसूरत बना दिया है।

मिम्बर कई बार बदले गए मगर जगह आज तक वही रही जो हुजूर (सल्ल0) के वक्त में थी।

नसई में हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "मेरे मिम्बर के पास बहिश्त की सीढ़ी होगी।"

3. मेहराबे नबवी

जिस जगह आप (सल्ल0) नमाज पढ़ा करते थे। आप (सल्ल0) की वफात के बाद हज़रत अबुबकर सिद्दीक़ (रज़ि0) ने आप (सल्ल0) के सिज्दा की जगह दीवार बना दी ताकि आप (सल्ल0) के सिज्दे की जगह किसी के कदम न पड़ें। चारों खुल्फाए राशिदीन के ज़माने में कोई मेहराब वगैरह नहीं थी। सन् 91 हिजरी में हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज ने अपने दौर में इस दीवार को एक मेहराब की शक्ल दे दी। जो कि आज तक कायम है। अब जो कोई इस मेहराब के सामने नमाज पढ़ेगा तो आप (सल्ल0) के कदम मुबारक की जगह पर सिज्दा करेगा।

इस मेहराब के पीछे मेहराब की दीवार में ही एक सुतून है जिसे सुतूने हन्नाना भी कहा जाता है। इस जगह पहले एक खजूर का तना था हुजूर (सल्ल0) इसी जगह खडे. होकर खुत्बा दिया करते और नफिल नमाज पढ़ा करते थे। आज कल जिस मेहराब या मुसल्ले पर इमाम खड़े हो कर नमाज पढ़ाते हैं यह मेहराब उस्मानी है क्योंकि यह हज़रत उस्मान जुन्नूरैन (रज़ि0) ने बनवाया था। हज़रत उमर फारूक (रज़ि0) को मेहराबे नबवी पर ही खंजर से हमला कर के शहीद किया गया था। जब मस्जिद की तौसी हुई तो हज़रत उस्मान (रज़ि0) ने किब्ला की तरफ मस्जिद की तौसी कर के नया मुसल्ला या मेहराब बनाया और अगली सफों को जाली से घेर दिया ताकि उसी तरह नमाज के दौरान उन पर भी हमला न हो। अब वह जालियाँ तो नहीं हैं मगर मेहराब वहीं है।

4. सुतूने आईशा (रज़ि0)

हूजूर (सल्ल0) ने फरमाया कि मेरी मस्जिद में एक जगह ऐसी है कि अगर लोगों को इस की फजीलत मालूम हो जाए तो वहाँ नमाज की अदाईगी के लिए आपस में कुरा अंदाजी करें। चूँकि हज़रत आईशा (रज़ि0) ने इस जगह की निशानदही की थी इस लिए इसे सुतूने आईशा (रज़ि0) कहा जात है।

5. सुतून अबु लुबाबा

ग़ज्वा–ए–खंदक के बाद हज़रत अबु लुबाबा से गैर शउरी तौर पर एक गलती हो गई थी। जिस के लिए वह बहुत नादिम हुए और तौबा इस्तग़फ़ार किया और अपने आप को इस सुतून से बाँध लिया और ये अहद किया कि जब तक अल्लाह तआला मेरी तौबा कुबूल न करेंगे मैं इस सुतून से बंधा रहूँगा। अल्लाह तआला ने इन की तौबा कुबूल की तब उन्होंने अपने आपको आजाद कराया। इस सुतून को इस लिए उन के नाम से याद किया जाता है। यहाँ आप (सल्ल0) नमाज अदा किया करते थे।

6. सुतूने सरीर

इस जगह रमजान के आखरी अश्रा में एतिकाफ के लिए हुजूर (सल्ल0) का बिस्तर बिछाया जाता था। आप (सल्ल0) के बाद हज़रत उमर फारूक (रज़ि0) ने भी यहीं एतिकाफ किया और इमाम मालिक (रह0) मस्जिद में इसी जगह बैठा करते थे।

7. सुतूने हर्स

इस सुतून के पास वे सहाबा किराम बैठा करते थे जो आप (सल्ल0) की हिफाजत पर मामूर होते थे।

8. सुतूने वफूद

जब अरब के वफूद हाजिरे खिदमत होते तो आप (सल्ल0) उन से इसी जगह मुलाकात फरमाया करते।

सुतूने सरीर, सुतूने हर्स और

सुतूने वफूद अब आधे जाली के अंदर हो गए हैं।

सहाबा किराम (रज़ि0) नमाजो के लिए सुतूनों की तरफ जल्दी पहुँचते क्योंकि सुतून नमाजियों के लिए सुतरा (आड़) का काम भी देता हैं हज़रत बुखारी (रह0) ने हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत की है कि मैंने देखा कि बड़े–बड़े सहाबा किराम (रज़ि0) मग़रिब के वक्त मस्जिद के सुतूनों की तरफ दौड़ पड़ते। सहाबा किराम (रज़ि0) ने सुतूनों के पास नमाज पढ़ी है इस लिए उन के पास नमाज पढ़ना मुस्तहब है।

9. सुतूने तहज्जुद

यह वह सुतून है जहाँ नबी करीम (सल्ल0) नमाजे तहज्जुद अदा किया करते थे।

10. सुतूने जिब्रईल

यह वह मुक़ाम है जहाँ नबी करीम (सल्ल0) की हज़रत जिब्रईल अलैहिवसल्लम से मुलाकात हुई थी। विसाल से पहले वाले रमजान में नबी करीम (सल्ल0) ने हज़रत जिब्रईल के साथ कुरआन शरीफ का दौर इसी जगह फरमाया था। यह दोनों सुतून बिल्कुल रौज़ा ए–मुबारक के अंदर आ गए हैं। इस लिए बाहर से नज़र नहीं आते। गुम्बदे खज्रा इन्हीं पर कायम किया गया है।

11. असहाबे सुफ्फा

सुफ्फा साएबान और साएदार जगह को कहा जाता है। कदीम मस्जिदे नबवी (सल्ल0) के शुमाल में मशरिकी किनारे पर मस्जिद से मिला हुआ एक चबूतरा था यह जगह इस वक्त बाबे जिब्रईल से अंदर दाखिल होते वक्त मकसूरा शरीफ के शुमाल में मेहराबे तहज्जुद के बिल्कुल सामने दो फिट ऊँचे कटघरे में घिरी हुई है। इसकी लंबाई चौड़ाई 4040 फिट है इसके सामने खुद्दाम बैठे रहते हैं और यहाँ लोग कुरआन पाक की तिलावत में मसरूफ रहते हैं।

आखिरी सलाम

हुजूर (सल्ल0) और सहाबा–ए–कराम (रज़ि0) ने अपनी सारी ज़िन्दगी और सारा माल व दौलत कुर्बान कर दिया था ताकि इस्लाम दुनिया के कोने–कोने में पहुंच जाए इन की कुर्बानियों से ही इस्लाम हम तक पहुँचा है। वह हम से भी यहीं उम्मीद रखते हैं कि हम पहले खुद इस्लाम पर चलें और फिर वह काम जो वह छोड़ गए उसे आगे बढ़ाएं। अल्लाह तआला ने भी कुरआन मजीद में इरशाद फरमाया है कि तुम में एक ऐसी जमाअत होनी चाहिए जो लोगों को नेकी की तरफ बुलाए और बुराई से रोके।

अगर हम और आप चाहते हैं कि आँहुजूर (सल्ल0) की शफकत की निगाहे हम पर पड़े तो पहले आप (सल्ल0) की उम्मीदों पर हमें पूरा उतरना होगा। और अगर हम ये समझते हैं कि दो बूँद आँसू बहा कर बड़ी–बड़ी नातें पढ़ कर और बड़े–बड़े आप (सल्ल0) से मुहब्बत के दावे कर के हम आप (सल्ल0) को खुश कर लेंगे तो ये हमारी गलत फहमी है।

अल्लाह ताआला से हमारे मगफिरत के लिए दुआ करें। फिर हुजूर (सल्ल0) से वादा करें कि बकिया ज़िन्दगी पूरी तरह इस्लामी तरीके पर गुजरेगी। अल्लाह तआला से आप दुआ करें कि अल्लाह तआला हमें और दूसरे मुसलमानों को इस्लाम पर पूरी तरह चलने की तौफीक अता फरमाए और कयामत में हुजूर (सल्ल0) की शिफाअत नसीब हो।

मुहसिने इंसानियत, शहंशाहे दो जहाँ वह जिस का आप पर आप से ज्यादा हक है। उन पर जितना दुरूद व सलाम भेजा जाए कम है मगर जो भी आप से बन पड़े अदब से एहतेराम से आँसुओं के साथ दुरूद व सलाम का नज़राना पेश करते हुए अपने वतन के लिए रूख्सत हो जाएं।

वतन के सफर की शुरूआत के साथ एक नई इस्लामी जिन्दगी की शुरूआत भी करें। अल्लाह तआला हमें, आपको और सारी दुनिया के मुसलमानों को दुनिया और आखिरत में सुर्ख़रू और कामयाब बनाए।

आमीन.....

❑❑

सच्चा राही के सहायक सम्पादक

जनाब हबीबुल्लाह आज़मी अल्लाह की रहमत में

– डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

"नहीं समझे अगर समझे यहीं पर हमको रहना है
जो आता है वो कहता है यहाँ से उसको जाना है"

जनाब हबीबुल्लाह आज़मी साहब 3 जनवरी 1928 ई0 को आजमगढ़ के एक खाते पीते खान्दान में पैदा हुए थे उनकी पैदाईश ने यह बात बताई कि वह एक उम्र ले कर आए हैं उसे पूरी कर के उन्हें जाना है।

अग्रेंजी दौर था, स्कूलों की कमी थी, कालेज तो खाल खाल थे तालीम आम न थी, जमींदार, बड़े काश्तकार और अच्छे कारोबारी ही अपने लड़कों को आला तालीम दिला पाते थे। जनाब हबीबुल्लाह साहब की आला तालीम हुई, अलीगढ़ से फरागत के बाद उन्होंने टीचिंग का पेशा अपनाया और तरक्की करके वह आखिर में हुसैनाबाद इन्टर कालेज के प्रिंसपल हुए और बड़े वकार के साथ इस मन्सब पर काइम रहे वहाँ से रिटायर्ड होने के बाद वह लखनऊ ही में बस गये, दीनी तालीमी कौन्सिल से वाबस्ता हो गये वहाँ उन्हों ने बडे अहम काम अंजाम दिये। दीनी तालीमी कौन्सिल की जानिब से सरकारी कोर्स की किताबों के जायजा लेने और इस्लाम मुखालिफ मवाद की निशानदेही में उनका अहम किरदार रहा है। वह दीनी तालीमी कौन्सिल से आखिरी साँस तक वाबस्ता रहे। नदवतुल उलमा से निकलने वाले हिन्दी परचा सच्चा राही के शुरू ही से सहायक सम्पादक बनाए गये। वह सच्चा राही के लिये मुफीद मजामीन का तर्जमा करते थे अब तक कोई परचा उनके मजमून से खाली नहीं है। उन्होंने हमारी बादशाही, मुख़्तसर तारीखे हिन्द, ख्वातीने इस्लाम आदि के तर्जमे सच्चा राही में छपवाए।

वह हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) से गहरा ताल्लुक रखते थे, हज़रत मौ0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी नाजिम नदवतुल उलमा, मौ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा से खुसूसी तअल्लुक रखते थे। डॉ0 इश्तियाक हुसैन कुरैशी (रह0) से भी उनका गहरा तअल्लुक रहा।

बड़ी ही मरंजा मरंज तबीअत पाई थी हमा वक्त संजीदा रहते, खुशकुन बात पर मुस्कुरा देते मैंने कभी ठहाका लगाकर हंसते नहीं देखा, नदवे आते तो हमेशा शेरवानी में आते, मुझ से बड़ी मुहब्बत फरमाते थे। मुझ से बराबर दीनी मसाइल पूछते रहते थे मैं किताबों से देख कर या मुफ्ती साहब से पूछ कर जवाब दे देता था। इन्तिकाल से दो तीन रोज पहले फोन से पूछा कि फोड़ा है हर वक्त रिस्ता रहता है पट्टी बान्ध कर वजू कर के नमाज पढ़े तो नमाज़ हो जाएगी? मैंने जवाब दिया कि ऐसा शख्स माजूर कहलाता है वह पाचों वक्त की हर नमाज के लिये ताजा वजू करके नमाज पढ़े उस की नमाज हो जाएगी।

बूढे तो थे ही आए दिन कुछ न कुछ लगा रहता था, बुखार आया निमोनिया हो गया अस्पताल दाखिल हुए वक्त पूरा हो चुका था अपने रब के हुक्म पर लब्बैक कहा और 3 सितम्बर 2010 ई0 (23 रमजान 1431हि0) जुमे के रोज अस्र के वक्त यह दुन्या छोड़ दी इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन। आज़मी साहब के जाने से मेरा एक बाजू टूट गया नहीं मालूम कि मुझे उस बाजू का बदल मिलेगा या उससे पहले मेरी भी रवानगी हो जाएगी लोग आते जाते रहेंगे और दुन्या के काम अल्लाह की मर्जी के मुताबिक चलते रहेंगे।

शेष पृष्ठ 5

एक हफ्तः हिमालय की गोद में

- एम0 हसन अंसारी

31 मई 2010 (सोमवार) श्री लीलाधर के यहाँ हल्द्वानी में ठहराव। प्रातः काल जो मेरे लिखने पढ़ने का समय होता है, कुछ विचार मन में आये, और यह कविता कलम से निकली, आप भी सुनें :

मानव–मन चंचल है

मानव–मन चंचल है,
भागता रहता है
कभी यहाँ, कभी वहाँ
और जाने कहाँ, कहाँ
सुख और शान्ति की खोज में,
यहाँ वहाँ भटकता रहता है,
भटकता है, चलता है
गतिशील रहता है
अन्ततः स्थिर हो,
ठहर जाता है और
उधर को लौट जाता है,
अभीष्ट को पा लेता है
शान्त हो जाता है
मानव–मन चंचल है।

श्री ख्याली राम को आज रूद्रपुर में एक मुकदमें की गवाही में जाना है, वह वहाँ गये। श्री लीलाधर मेरे कहने पर अपनी डयूटी पर, वरना वह छुट्टी लेकर मुझे घुमाना चाहते थे। मैं श्री लीलाधर के बड़े बेटे रवि के साथ जिम कार्बेट फाल देखने निकल गया हल्द्वानी से लगभग पच्चीस कि0मी0 दूर रोड साइड पर कार्बेट फाल है जिसे देखने के लिये लगभग एक कि0मी0 अन्दर जाना होता है इस से पाँच कि0मी0 पहले कालाडूँगी है जहाँ जी0आई0सी0 और जी0जी0आई0सी0 है और नदी है। कालाडूँगी से आगे बायें हाथ रामनगर को सड़क जाती है और सीधे हाथ कार्बेट पार्क को। कार्बेट फाल के पास एक होटल है। कार्बेट फाल से पहले कार्बेट का गाँव है, इसके बाद साल (साखू) के लाखों पेड़ कोई दस साल पहले लगाये गये हैं जो एक तरह से इक्कीसवीं शताब्दी के शुभारम्भ के घोतक हैं और इसके समापन पर एक बड़ी वन सम्पदा दे जाएंगे ऐसी आशा है, और "साल सौ साल खड़ा" और "सौल पड़ा" रहने की कहावत को चरितार्थ करेंगे। कार्बेट फाल कुछ ऐसे ही है जैसे मिर्जापुर जिले में विंडम फाल। कार्बेट फाल में लोग नहाते हैं पर यह सही नहीं, प्राकृतिक सौन्दर्य की खिल्ली उड़ाना जैसा है यहाँ खैर (कत्था) का पेड़ देखा, यहाँ से एक नहर निकाली गई है। कार्बेट पार्क यहाँ से 44 कि0मी0 दूर है जहाँ नहीं जा सके। शाम को रामपुर रोड पर बाहर से आकर बसे लोगों की तरफ गये और उनका रहन सहन देखा।

पहली जनू 2010 (मंगलवार) श्री ख्याली राम काण्डपाल (कन्याल) के गाँव खान आज जाना है। पं0 गंगा दत्त उप्रेती जी के मतानुसार कन्याल उन ब्राह्मणों की सूची में हैं जिन्हें उप्रेती जी उच्च कोटि का बताते हैं, जो उपाध्याय ब्राह्मण हैं और यहाँ बाँदा से आये। खान गाँव बुद्धिजीवियों का गाँव रहा है जिस के आसार वहाँ दिखे। श्री ख्याली राम के एक निकट सम्बन्धी हाई कोर्ट नैनीताल में जज हैं, और दूसरे वहाँ वकील हैं। ख्याली राम के पिता ज्योतिषी थे और पुरानी मान्यताओं के मानने वाले, बाप के संस्कार बेटे में पूर्ण रूप से परिलक्षित होते हैं। काण्डपाल जी अत्यन्त सहज और सरल स्वभाव के हैं, सच का दामन किसी भी हालत में नहीं छोड़ने वाले, महाशक्ति में विश्वास और आस्था रखने वाले, कर्मठ, निष्ठ, कर्मकाण्ड के प्रतिनिधि, परोपकारी जीव, विनम्र, आतिथ्य सत्कार में निपुण। काण्डपाल जी ने बताया कि पं0 लक्ष्मी दत्त कन्याल जो खान गाँव के रहने वाले थे एक महान ज्योतिषी

थे, बरेली में रहते थे, गांधी जी के साथ रहते थे उनके समकालीन आजादी दिलाने वाली कमेटी के मेम्बर थे उन्होंने ही भविष्यवाणी की थी कि लन्दन में आजादी के लिये होने वाली कान्फ्रेंस में भारत को छः मतों की बढ़त मिलेगी और आधी रात को आजादी मिलेगी।

हल्द्वानी से काण्डपाल जी के साथ प्रातः आठ बजे निकले, बस नौ बजे चली। नैनीताल दस बजे पहुँचे। हल्द्वानी से निकल कर जहाँ से पहाड़ की यात्रा शुरू होती है, एक मोड़ पर नई जाति के बाँस की कोठ देखी, बाँस सीधे काफी लम्बे और मोटे। हल्द्वानी का विस्तार, वन विभाग के लट्ठों की टालें जो दूर तक दिखीं, ट्रकों से पत्थर की ढुलाई ने विशेष प्रकार से ध्यान खींचा। पहाड़ पर जायें तो ऊँचाई के साथ पेड़ों का क्रम इस प्रकार दिखाई पड़ा। साल (साखू), शीशम, तून चीड़, देवदार। दो गाँव से आगे ज्योली कोट उसके आगे डान बारको और सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल गाड़ी ही से देखा।

नैनीताल में प्रवेश करते ही निगाह एक बोर्ड पर पड़ी जिस पर लिखा था 'सरोवर नगरी में आप का स्वागत है।' बस स्टेशन तल्लीताल में हैं, यहाँ उतर कर सामान वहीं रखा और कलेक्ट्रेट की तरफ ऊपर निकल गये। कलेक्ट्रेट की बिल्डिंग 1937 में अंग्रेजी राज्य में पत्थर की बनी, मजबूत और समानुपातिक (परपोर्शनेट) जो किसी इमारत की जान ही है। आज कार्य दिवस है, दफ्तर समय से खुल गये हैं, कर्मचारी समय के पाबन्द और मुस्तइद पाये गये। नैनीताल में पालीथीन पर पाबन्दी है, यह अच्छा हुआ। इक्कीस साल पहले यहाँ प्रशासनिक अकेडमी में एक सप्ताह के लिये आया था, तब से अब में बहुत फर्क है, अब यह साफ सुथरा शहर है, पर्यटकों की आमद बढ़ी है। ताल के किनारे साफ सुथरे, सुव्यवस्थित दिखे। नैनीताल वासी श्री राजेन्द्र सिंह निष्ट जी से मुलाकात हुई, मुझसे उम्र में पाँच साल बड़े, कहते हैं, "अब यहाँ काफी बदलाव आ गया। आगे बढ़े जामा मस्जिद नैनीताल, मल्लीताल के पास रूके। शानदार मस्जिद, सफाई और तहारत का खास इन्तेजाम, अन्दर गये। दो रकअत नमाज पढ़ी। हाल में पाँच छः सफें हैं। कालीन बिछा है। जमाअत के लोग दायरा बना कर बैठे हैं, तालीम हो रही है बाहर आये थोड़ी देर नवजवान मुफ्ती अब्दुल खालिक साहब के पास बैठा जो यहाँ नायब इमाम हैं, दोपहर का समय है, अपनी छोटी सी दुकान जो मस्जिद की ही है में बैठे हैं किताबों की दुकान है, दीनी किताबों में 'कुर्आनी अफादात', जो मुहम्मद हसनी ट्रस्ट, रायबरेली का पब्लीकेशन है, देखी। मानवता का सन्देश पर तीन किताबचे खरीद कर काण्डपाल जी को भेंट किया। यहाँ से ऊपर हाई कोर्ट है। लौट पड़े। नैनीताल छोड़ने से पहले झील के किनारे ब्रूश की धनी छाँव में पत्थर के फुटपाथ के किनारे जुहर की नमाज पढ़ ली। ब्रूश के पुराने–नये यहाँ काफी पेड़ देखे। इसकी पत्ती कपास की पत्ती की तरह होती हैं छायादार पेड़ है। नैनीताल में प्राकृतिक छटा विलुप्त प्राय होती जा रही है, आधुनिकीकरण का दौर दौरा है। मल्ली ताल में बना सुपर मार्केट सामान से भरा पड़ा है, इस के आगे लखनऊ का अमीनाबाद झख मारे। झील में मोटर बोट्स में बैठ कर आनन्द लेते जोड़ों को देखा, पर बोटिंग का मजा कुछ और ही है जिसमें बाजुओं की ताकत इस्तेमाल होती है और चप्पू चलाना पड़ता है। नैनीताल से भीमताल, भवाली, खैरना होते हुए काकड़ी घाट आ गये जहाँ से खान गाँव पाँच कि0मी0 दूर है। वहाँ से समय पाँच बजे के लगभग काण्डपाल जी के घर पहुँचे जहाँ बाहरी कमरे में मेरे ठहरने की समुचित व्यवस्था की गई थी।

2 जून 2010 (बुधवार) श्री ख्याली राम काण्डपाल के साथ प्रातः प्राकृतिक सौन्दर्य नगरी अल्मोड़ा के लिये निकले। काकड़ी घाट से मारूति से अल्मोड़ा, जो काकड़ी घाट से तेईस कि0मी0 दूर है, पहुँच कर बाईपास से चितई, जो अल्मोड़ा से पाँच–सात कि0मी0 आगे है, लगभग

दस बजे पहुँचे। यहाँ गोल देवता का मशहूर मन्दिर है, यहाँ दूर–दूर से लोग आते हैं, मन्नते मानते हैं चढ़ावा चढ़ाते हैं। मन्दिर के बाहर चढ़ावे का सामान बेचने वालों की अनेक अस्थायी दूकानें हैं। एक जोड़ा गाड़ी से उतरा, चढ़ावे का सामान जिस में प्रायः एक घंटी छोटी–बडी होती है और नारियल आदि सात सौ इक्यावन का, जवान ने पर्स निकाला, पैसे कम थे ए0टी0एम0 याद आया जो यहाँ नहीं, पत्नी ने अपने पर्स से पैसा निकाला भुगतान किया अन्दर गये। चढ़ावा चढ़ाया, परिक्रमा की, मन्नत मानी। गोल देवता मन्दिर में चारों ओर हजारो की तादाद में घंटे और घड़ियाल, छोटे बडे देखे, नये–पुराने हर तरह के। सबसे बड़ा घंटा बीस पच्चीस किलो वजन का होगा। मन्दिर द्वारा पर टंगे घंटों का बजाना सब नहीं जानते यह एक कला है। चढ़ावा के बाद श्रद्धालु प्रसाद लेते हैं जिसे श्रद्धा पूर्वक खाते और खिलाते हैं आचमन करते हैं। श्रद्धालु अनेक पूज्य एक। चितई में गोल देवता मन्दिर के बाहर कुछ होटल और दुकाने हैं, मन्दिर के पीछे की तरफ से निकलने वाली सड़क पर आइये तो यहाँ से हिमालय का मनमोहक ग्लेशियर दिखाई देता हैं चितई जाते हुए ऊपर वन विभाग द्वारा काँटेदार बाऊँड्री पर लिखा हुआ दिखा 'यहाँ तेन्दुए रहते हैं। चितई में खाना खाया और अल्मोड़ा आ गये।

अल्मोड़ा की लाला बाजार में मस्जिद है दोपहर की नमाज पढ़ी मस्जिद नये सिरे से बनाई जा रही है। काम चल रहा है। लाला बाजार की गलियाँ बनारस की गलियों जैसी हैं। घर के शुरू में नीचे से ऊपर आने में मेन रोड की चढ़ाई मार डालती है। दुकाने सामान से भरी पड़ी हैं। दोपहर में बिक्री कम दिखी।

अल्मोड़ा का दूसरा मुख्य रोड 'मालरोड' है। कलेक्ट्रेट होकर माल रोड पर आ गये इसी के समानान्तर ऊपर की ओर प्रशासनिक कार्यालय हैं। यहीं पर विवेकानन्द जी के विश्राम स्थल पर उनकी यादगार कायम की गई है, और उनकी मूर्ति कायम है जिसके नीचे लिखा है 'महान कार्य, महान त्याग के बिना नहीं होता' विवेकानन्द जी0आइ0सी0 अल्मोड़ा के द्वार पर स्थापना वर्ष 1889 अँकित है जिसके सामने एक विशाल देवदार का पेड़ है जो करीब 120 साल पुराना होगा और जिस की लपेट पन्द्रह बीस फीट होगी। ऐसा अनुमान है। माल रोड पर ही गांधी वाटिका है, जहाँ कहते हैं, गाँधी जी कुछ देर बैठे थे, या बैठ कर लोगों को सम्बोधित किया था, यहाँ गाँधी जी की वह मूर्ति (बैठने की मुद्रा में) स्थापित है जो बहुत कम पाई जाती है। इस वाटिका में थोड़ी देर बैठे। सन् 1929 में गाँधी जी अल्मोड़ा आये थे। और तीन हफ्ता यहाँ रहे थे।

अल्मोड़ा शहर साफ सुथरा नहीं है। पालीथीन जो प्रदूषण का एक बड़ा कारक है, पर प्रतिबन्ध लगाये जाने की माँग बढ़ रही है। पालीथीन के प्रयोग पर हर जगह प्रतिबन्ध लगना चाहिये। अल्मोड़ा के चारों ओर पहाडियाँ है, गोलाकार प्याले के आकार में, जिसके मध्य में चपटी पहाड़ी पर अल्मोड़ा शहर आबाद है। यहाँ से रानी खेत कोई पच्चीस–तीस कि0मी0 दूर होगा और वहाँ की ऊँचाई कोई पाँच फिट से अधिक होगी।

शहर अल्मोड़ा की समुद्र तल से ऊँचाई पाँच हजार पाँच सौ फीट के लगभग है। पिंडारी ग्लेशियर जो तेरह चौदह हजार फिट ऊँचाई पर है, अल्मोड़ा से कोई सौ कि0मी0 दूर है। यहाँ की प्राकृतिक छटा को देख कर गाँधी जी ने कहा था "मुझे बड़ी हैरत है कि हेल्थ की तलाश में भारत के लोग योरोप क्यों जाते हैं।" पर अब कोई सौ साल बाद भौतिकवाद से प्राकृतिक छटा को ग्रहण लगता सा दिखा। अल्मोड़ा जिले में हिमालय की चोटियाँ 16800 से लेकर 25689 फीट तक ऊँची चली गई हैं, जिनमें प्रमुख नन्दा देवी (25689), त्रिशूल (22360), नन्दकोट (22530) और पंचचली (22530) हैं जिन्हें देखकर डाक्टर इकबाल की कविता "हिमालय" की यह लाइने याद आने लगती है :–

ऐ हिमालः! ऐ फसीले किश्वरे हिन्दोस्ताँ
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आसमाँ

ऐ हिमालः! दास्ताँ उस वक्त की

कोई सुना
मस्कने आबाद–ए– इंन्साँ जब बना दामन तेरा''

अल्मोड़ा से वापसी दूसरे पहर हुई। काकड़ी घाट पहुँच कर शाम होने को आई। कोशी नदी पर बिछाये गये पत्थरों पर चलकर वहाँ पहुँचे जहाँ विवेकानन्द जी को रौशनी मिली थी, यहाँ रानीखेत की तरफ से आकर सिरौता नदी कोशी में मिलती हैं कुछ देर यहाँ ठहर कर सूर्यास्त के समय खान गाँव आ गये जो यहाँ से पाँच कि0मी0 दूर हैं।

3 जून 2010 (वृहस्पतिवार) आज रानी खेत वाया खुडौली गये। पहाड़ी पार करने में करीब डेढ़ घंटे लग गये, खड़ी चढ़ाई है, इधर से रानीखेत कुछ नजदीक पड़ता है। खुडौली पहुँचे तो पता चला रानीखेत जाने वाली गाड़ियाँ निकल चुकी हैं। वहाँ से आगे एक कि0मी0 चलकर एक डी0सी0एम0 माल वाहक गाड़ी मिली, जिससे रानीखेत पहुँचे और चौबटिया के पास छावनी में झूला देवी के मन्दिर के पास ट्रक ने उतारा। श्री काण्डपाल ने झूला देवी के दर्शन किये। चौबटिया यहाँ से आठ–दस कि0मी0 दूर है, दर्शनीय स्थल है। झूला देवी का मन्दिर सात सौ साल पुराना बताया जाता है यहाँ भी हजारों घंटे घड़ियाल देखे।

रानीखेत को बद्रीदत्त पाण्डेय जी ने गोरा नगरी कहा है जो 1869 में बसी। काण्डपाल जी ने बाया कि अल्मोड़ा की रानी को यह जगह बहुत पसन्द थी जो अल्मोड़ा से लगभग 35 कि0मी0 दूर होगी। रानी के लिये यहाँ रानी बाग बनवाया गया जहाँ रानी छः महीने रहती थी। यही स्थान रानीखेत कह लाया। रानीखेत में झूला देवी के मन्दिर के पास एक शिला लेख पर अँकित है कि इसे लार्ड मेयों ने 1889 में बसाया और इस स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई 7164 फीट है।

झूला देवी के मन्दिर से चौबटिया पहुँचना एक समस्या थी। हम दोनों पैदल चल दिये, थोड़ी दूर चले होंगे कि वन विभाग की एक जिप्सी निकली जिस पर एक महिला अधिकारी और उनका चपरासी सवार थे, काण्डपाल जी ने हाथ दिया, उस महिला को हम पर तरस आया, गाड़ी रूकी, हम दोनों को बिठाया और चौबटिया में उतारा, किराया नहीं लिया, कहा हम डेढ़ बजे लौटेंगे, उस समय रानीखेत वापस चलना चाहें तो यही मिलें और उस भली औरत ने ऐसे ही किया। सज्जन और शरीफ आत्मायें समाज में हमेशा रही हैं, धन्य हैं ऐसे लोग।

चौबटिया में वन विभाग और उद्यान (हार्टी कल्चर) के दफ्तर के अलावा पन्त कृषि विश्व विद्यालय का शोध केन्द्र भी है। यहाँ नये लगाये गये सेब के बाग देखे। देवदार तो देखते ही रह जाइये, इन्हीं के लिये कहा गया है :

ऊँचे–ऊँचे देवदार की मुस्कान
रानीखेत की है यही शान।

चौबटिया से लौट कर झूला देवी मन्दिर के पास बने कुमाऊँ हट्स के बरामदे में दोपहर की नमाज पढ़ी और प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते हुए झील के किनारे– किनारे चलकर माल रोड से प्रधान डाक घर, आर्मी हास्पिटल, नरसिंह स्टेडियम, गिरजा घर देखते हुए ऊपर आ गये। गिरजा घर बड़ा और पुराना है, इस पर एक तरफ 'आर्मी कम्यूनिकेशन सेन्टर' और दूसरी तरफ –पंजाब नेशनल बैंक' लिखा हुआ देख कर अटपटा सा लगा। झील की तरफ जाते हुए केन्द्रीय विद्यालय है। रानीखेत की आबादी ज्यादा नहीं है। यहाँ खैरना से आने वाली रोड़ पर ईसाई कब्रिस्तान से ऊपर देवदार के पेड़ों की दो कतारें सड़क के किनारे हैं, यह देव दार काफी पुराने और विशालकाय हैं, यह निश्चय ही एक सौ बीस साल से ऊपर के होंगे। रानीखेत में दोपहर का खाना खाया, यहाँ चार बजे के लगभग वापसी के लिये गाड़ी मिल गयी जिसने एक घंटे में खान गाँव के नीचे सड़क पर लाकर उतारा, और ठिकाने पर समय से आ गये।

4,5 जून 2010 (शुक्रवार, शनिवर) यहाँ जुमा पढ़ नहीं सका। खान गाव में रहकर सफर की दास्तान लिखा, गाँव के प्राथमिक विद्यालय और पूर्व माध्यमिक विद्यालय को ऊपर जाकर देखा। काण्डपाल जी ने बताया कि प्राइमरी

स्कूल का पुराना भवन रातो रात तोड़वा कर ठेकेदार ने नया भवन बनाया जो टिकाऊ नहीं है और पुराने भवन जिस में उन्हों ने पढ़ा था उस के न रहने का उन्हें बड़ा दुख है। और ऐसा होना स्वाभाविक है। शनिवार की शाम को यहाँ शादी का आयोजन भी देखा, बेटे की कल बारात जायेगी। बारात भवाली जायेगी? लड़की वाले हल्द्वानी से भवाली आयेंगे और विवाह भवाली के सम्पन्न होगा। मनुष्य परिस्थितियों का दास है। दोनों पक्ष के लोग समझदार दिखे। कुछ वह चले कुछ यह चले। शाम के खाने के साथ विवाह का बरा मैं ने भी खाया।

6 जून 2010 (रविवार) को वापसी हुई। काण्डपाल जी भवाली तक पहुँचाने आये और 'अतिथि देवो भव' को चरितार्थ करते हुए, न केवल मेरे बच्चों के लिये अपितु बरेली और लखनऊ के लिये भी जहाँ मुझे रूकते हुए आना था, सौगात के तौर पर राजमा, चीड़ के फल (सजावट के लिये), बाल मिठाई और आड़ू की पेटी साथ कर दी। हल्द्वानी में श्री लीलाधर आ गये थे, उन्होंने आराम से बरेली जाने वाली बस में बिठाया और विदा किया। सांय सदर बाजार बरेली छावनी छोटी बहन के यहाँ पहुँचे। दूसरे दिन लखनऊ बड़े बेटे के यहाँ और तीसरे दिन 8 जून 2010 को अपने गाँव सरकौंडा आ गये। सकुशल, सारी तारीफ और स्तुति खुदा की बयान करता हूँ जिस ने यह सैर कराई और अपनी नेअमतों को दिखाया।

पर्वतीय गाँव

कुमाऊँ में घर ज्यादातर पत्थर के बने होते हैं। छत ढालदार होती है वह पत्थर के पटाल से छायी जाती है जिस में रौशनी के लिये रौशनदान और धुँआ निकलने के लिये चिमनी की समुचित व्यवस्था होती है, छप्पर नहीं दिखे। कहीं–कहीं अब टीन की चद्दरे लगाने लगे हैं। दरवाजे, खिड़की मजबूत लकड़ी (तुन, देवदार, चीड़) के होते हैं जिनमें कहीं–कहीं नक्काशी भी देखी। गाँव वाले घर को 'कुड़' कहते हैं। नीचे के हिस्से को 'गोठ' और उसके बरामदे को 'गोठमाल' कहते हैं जिस में अक्सर गायें रहती हैं। प्रायः गोशाले नीचे खेतों के पास बने होते हैं ऊपर का हिस्सा 'मझेला' कहलाता है, उस का बरामदा अगर खुला हो तो 'छाजा' यदि बन्द हो तो 'चाख' कहते है। छत को 'पाखा' कहते हैं सदर दरवाजा को 'खोली' और कमरे को 'खंड' कहते हैं। घर के पिछले भाग को 'करॉंडी' कहते हैं। बहुत से मकान जो साथ–साथ होते हैं 'बाखली' कहलाते हैं।

फलों के नाम

घरेलू फल– अखरोट, पुलम (आलू बुखारा), अलूचा, आड़ू, खूबानी, आम, इमली, अमरूद, अनार (ताड़िम), अँगूर, नासपाती, नीबू, चकोतरा, सेब, नारंगी, शहतूत (कीमू), अँजीर आदि।

जंगली फल– आँचू (हिसालू) अँजीर (बेडू), बेहड़ा, आँवला, बेर, बादाम, स्यूँता (चिलगोजा), चीलू, गूलर, हड़, जामुन, काफल, खजूर, मेहल, कचनार आदि।

कुमाऊँ में मुसलमान

अल्मोड़ा में मुसलमान राजा बाज बहादुर चन्द के समय आये। यद्यपि रोहिलों ने दो तीन बार कुमाऊँ पर चढ़ाई की तथापि उन्हों ने यहाँ अपनी बस्ती नहीं बनाई। पर्वतों में वे बहुत कम थे, किन्तु अब उनकी बस्तियाँ यत्र–तत्र हो गयी हैं। तराई भावर में वे नवाबी समय से रहते आये हैं। 1921 में अल्मोड़ा में 75 घर मुसलमानों के थे जिन में 57 घर तिजारत पेशा लोगों के थे। और शेष नौकरी करने वालों के थे।

इन में शेख, सैयद, मुगल पठान सभी हैं। शेख पर्वतों में ज्यादा हैं। और उनमें जिला बिजनौर (बेरकोट) के ज्यादा है। तराई में कई रईस घरानों के जमींदार है जो रामपुर के पठान हैं।

उपसंहार और उद्‌गार

यात्रा सुखद रही। सफर मुसाफिर को सहन शील बनाता है, उदारता विकसित होती है, विनम्रता बढ़ती है, "सफर है शर्त मुसाफिर नवाज़ बहुतेरे", चरितार्थ होती है, स्वास्थ्य के लिये भ्रमण लाभदायक है, कुदरत की नैरंगियों को देख ख़ुदा याद आता है, प्राकृति की गोद में 'ल्यूसी' पलती है तो स्वच्छ और निर्मल होती है।

शेष पृष्ठ 9

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' खत्म

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सात साल पुराने 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' के समापन का एलान कर दिया। इराक में जंगी मुहिम खत्म होने को अमेरिका और इराक के इतिहास का उल्लेखनीय अध्याय करार देते हुए ओबामा ने कहा कि अब नई इबारत लिखने का वक्त आ गया है।

ओबामा ने कहा कि यह इराकियों को अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी खुद संभालने का समय है। हालाँकि इराकी सेना को प्रशिक्षित करने के लिए करीब 50,000 अमेरिकी सैनिक इराक में बने रहेंगे। ओबामा ने कहा कि इराक में जंगी अभियान खत्म होने के बाद अब अमेरिका अफगानिस्तान में आतंकवादियों के खिलाफ जारी मुहिम के लिए जरूरी संसाधनों का इस्तेमाल कर सकेगा।

जंग–ए–इराक

❖ जनसंहारक हथियार के आरोप में 2003 में इराक के खिलाफ छेड़ी गई थी जंग।

❖ 4400 अमेरिकी सैनिकों की मौत, हजारो घायल।

❖ अरबों डॉलर हुए खर्च।

तालिबान के साथ कोई बातचीत नहीं हो रही : अमेरिका

वाशिंगटन! अमेरिका ने इस बात का खंडन किया कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान के लिए उसके विशेष दूत रिचर्ड हॉलब्रूक ने हाल ही में अफगान तालिबान और इस्लामी नेताओं से मुलाकात कर अमेरिकी सेनाओं की वापसी के बाद राष्ट्रीय सरकार बनाने पर उनसे चर्चा की थी। विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, हॉलब्रूक तालिबान नेताओ से नहीं मिले हैं। कहा जा रहा था कि हॉलब्रूक के प्रतिनीधियों ने हॉलैंड के मिशेल सिंबल और ब्रिटेन से जार्ज डाक्औईन से 17 और 21 अगस्त को इस्लामाबाद और पेशावर में जमात उद दावा और सलफी तालिबान नेताओं से मुलाकात की थी।

हाफिज सईद नपेगा पर ठोस सबूत दो

पाकिस्तान ने कहा है कि वह मुम्बई हमलों में आरोपित 'जमात–उद–दावा' प्रमुख हाफिज सईद के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए तैयार है लेकिन साथ में पाक ने यह भी जोड़ दिया है कि भारत को ऐसे ठोस सबूत देने होंगे जो कानूनी तौर पर मजबूत हों और सईद को मुम्बई हमलों के लिए जिम्मेदार ठहराते हों। पाक ने आईएसआई और मुम्बई हमलों के बीच किसी तरह का संबंध होने की बात को भी गलत ठहराया है। पाक विदेश मंत्री ने कहा कि पाक सरकार ने हाफिज सईद को कई बार गिरफ्तार किया है लेकिन सबूतों के अभाव में अदालतें उसे रिहा करने का आदेश दे देती हैं।

सबसे बड़ी घड़ी मक्का में

❖ एक गगनचुम्बी इमारत पर होगी दुनिया की सबसे बड़ी घड़ी।

❖ यह इमारत विश्व की दूसरी सबसे ऊँची इमारत है।

❖ इसके टावर की लम्बाई 601 मीटर, घड़ी की लम्बाई 251 मीटर।

❖ घड़ी के नीचे पाँच मीटर की बालकनी तक लिफ्ट से पहुँचेंगे पर्यटक।

❖ घड़ी का टावर इस्लामी स्थापत्य कला का नमूना।

❖ घड़ी का प्रयोग के तौर पर संचालन रमजान में शुरू हो गया।

❑❑

सवाब लीजिये

यदि सच्चा राही की बातें अच्छी हैं इन के पढ़ने में दीनी या दुन्यावी लाभ हैं तो इसे दूसरों को पढ़ाकर सवाब लीजिये।